डॉ. क



इस नाटक का किसी भी रूप में उपयोग करने से पूर्व लेखक से पूर्वानुमति लेना आवश्यक है।



ुनिक ...

लेखक
डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा

राजा राम मोहन राय
पुस्तकालय प्रतिष्ठान
कोलकता के सौजन्य से



हित्यागार

आधुनिक यमलोक (नाटक)

© लेखक

डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा

मूल्य
अस्सी रुपये मात्र

संस्करण
2002

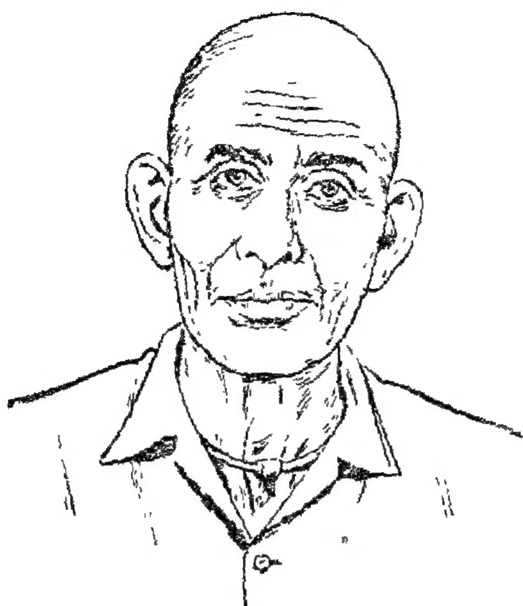
प्रकाशक
साहित्यागार
चौड़ा रास्ता , जयपुर-3

वितरक
बाणगंगा प्रकाशन
बी-177, नित्यानन्द नगर,
क्वीन्स रोड, जयपुर-21

आई.एस.बी.एन
81-7711-031-4

लेजर टाईपसैटिंग
साहित्यागार कम्प्यूटर्स

मुद्रक
शीतल ऑफसैट, जयपुर



पूज्य पिताजी स्व. श्री गणेश दास शर्मा

की चिर स्मृति में

श्रद्धानत् सादर

समर्पित

जिनके ही आशीर्वादस्वरूप भारतीय

संस्कृति, साहित्य एवं कला के प्रति

अनुराग उत्पन्न हुआ।

इस नाटक के विभिन्न प्रदर्शनों में जब जब मैंने प्रसिद्ध नाटककार स्व० श्री हमीदुल्ला, परम श्रद्धेय गुरूजी आदरणीय डॉ० प्रेमप्रकाश भट्ट, गुरुमाता डॉ० निरूपमा भट्ट एवं डॉ० गजानन्द मिश्र साहब को आमन्त्रित किया तब तब आपने उपस्थित होकर मेरा उत्साहवर्धन किया। परन्तु इनका आभार प्रदर्शन करने में मैं अपने आपको समर्थ नहीं पा रहा हूँ। हाँ मैं आभारी रहूँगा उन सभी रंगकर्मियों एवं पाठकों का जो मेरी इस कृति को पढ़कर मेरा उत्साहवर्धन करेंगे।

कैलाश चन्द्र शर्मा

डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा

मानसेवी प्राचार्य,

त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय

नित्यानन्द नगर क्वीन्स रोड़, जयपुर

दूरभाष 0141-352371

कथासार

यमलोक का दृश्य यमराज अपने आसन पर बैठे खर्राटे ले रहे है। यमलोक का रिश्वतखोर एवं भ्रष्ट चौकीदार किस्मती व उसका साथी उपकारी ड्यूटी के दौरान ताश के पत्ते खेलने मे मशगूल है।

यमराज अपने पूर्व जीवन मे धरती पर एक राज्य के मुख्यमंत्री थे तथा चौकीदार किस्मती एक शहर में थानाधिकारी एवं चपरासी उपकारी भी उनका साथी था, अत इस जन्म में ये सब जोड़-तोड़ बैठाकर एक ही कार्यालय मे नियुक्त हो गए है। पृथ्वी पर ये लोग भ्रष्टाचार मे लिप्त थे अत. यहा पर भी यमराज अपने सहयोगियो, किस्मती व उपकारी के साथ आत्माओं का न्याय करने में खूब रिश्वत ऐंठते हैं तथा सभी ईमानदार आत्माओ को नर्क एवं बेईमान एवं दुष्ट आत्माओ को स्वर्ग मे स्थान देते है।

भोलाराम, साधू महाराज आदि नेक आत्माएं हैं जिन्होंने अपने पूर्व जन्म मे पृथ्वी पर हमेशा अच्छे कर्म किये एवं ईमानदारी से जीवन व्यतीत किया परन्तु यमराज को रिश्वत की धनराशि न दिए जाने के कारण उनके आदेश से किस्मती व उपकारी उन्हें नर्क में धकेल देते है। यमराज द्वारा अदालत मे निर्णय करते समय यह तर्क दिया जाता है कि स्वर्ग मे स्थान कम है अत वे अपनी सूझबूझ से न्याय करते हुए उन्ही व्यक्तियों को स्वर्ग का सुख देना चाहते है जो पृथ्वी पर हमेशा सुख भोगने के आदि रहे तथा जिन्होने कभी दु खो से साक्षात् नही किया। इन्हीं तथ्यों के आधार पर अपने साथियों- चौकीदार किस्मती व चपरासी उपकारी के जरिए रिश्वत लेकर वे जमीन के तस्करो की प्रसिद्ध एजेन्ट सितारा देवी, प्रसिद्ध डकैत व दस्यु सुन्दरी मूमल देवी तथा प्रसिद्ध जेबकतरे टाईगर को स्वर्ग मे भेजने का आदेश देते है तथा साधू महाराज द्वारा धार्मिक पिक्चरें देखने को मादक पिक्चरे मानते हुए अपराधी ठहराते है एवं नर्क मे भेज देते है।

यमलोक मे केवल बडे बाबू ही ईमानदार कर्मचारी हैं जो बेईमान व दुष्ट आत्माओं को नर्क एवं ईमानदार आत्माओं को स्वर्ग दिलाने के भरसक प्रयास करते हैं परन्तु यमराज के चालबाज व बेईमान साथी किस्मती व उपकारी ऐसी आत्माओ से पैसा ऐंठकर उसका आधा हिस्सा यमराज को पहुंचा देते है तथा शेष का आधा- आधा हिस्सा खुद रख लेते हैं। जब बडे बाबू दफ्तर से बाहर होते हैं तो ये दोनो उनकी आलमारी से बेईमान आत्माओं की फाईल चुराकर उनमें लगे विरोधी सबूतो को नष्ट करके यमराज

की दराज मे छपे छपाये प्रशंसा पत्र लाकर उनमें इन आत्माओ का नाम लिख देते है उन्होंने नकली मोहरे बनाने वाले नेकीराम से भी साठ-गाठ कर रखी है जो बडे बाबू की अनुपस्थिति मे यमलोक में आकर किस्मती व उपकारी के ईशारो पर मोहरें बना देता है तथा अपराधी टाइगर के सामने चौकीदार किस्मती की ओर मुखातिब होकर कहता है "अरे इनसे क्या छुपा है अब। ये जमीन पर बडे थानाधिकारी थे। कई मोहरें बनवाई थी इन्होने मुझसे। कई बडे-बडे वकील और जज घर पर मेरी सेवाए लेते थे और मुह मागी कीमत मिलती थी मुझे वहा पर।"

उपकारी टाईगर के छपे-छपाये प्रशंसा-पत्र पर नेकीराम से लेकर थानाधिकारी की मोहर लगाकर उसे फाईल मे लगाकर रख देता है। अदालत में बडे बाबू टाईगर को नरक दिलाने हेतु आवाज उठाते है तथा यमराज को कहते हैं कि महाराज थानाधिकारी ने अपनी रिपोर्ट मे लिखा है कि टाईगर धरती पर एक विशेष इलाके का प्रसिद्ध जेबकतरा था ओर इसके खिलाफ वहाँ के विभिन्न थानो मे सैंकडों अपराधिक मामले दर्ज थे तथा टाईगर ने वहाँ के नागरिको का जीना दूभर कर रखा था।

यमराज की जेब में टाईगर द्वारा दी हुई रिश्वत का हिस्सा पहुँच चुका होता है अतः वे बडे बाबू का उपहास करते हुए उन्हें फाईल देकर उसमें लगी थानाधिकारी की रिपोर्ट देकर उसमे लगी थानाधिकारी की रिपोर्ट पढ़ने को कहते हैं। बडे बाबू फाईल मे थानाधिकरी की रिपोर्ट देखकर दग रह जाते हैं पर अदालत में उपस्थित लोगो की माग पढते हैं-

प्रशंसा पत्र

मैं थानाधिकारी टाईगर की सामाजिक सेवाओ एव किये गए कार्यो तथा पुलिस प्रशासन का सहयोग देने के एवज मे यह प्रशंसा पत्र जारी करता हूँ-

टाईगर इस शहर का एक बहुत ही शरीफ और ईमानदार नागरिक है। शहर के बदमाशों और जेबकतरों को पकडवाने में एवं पुलिस की सहायता करने में इनका बहुत बडा योगदान रहा है।

हस्ताक्षर थानाधिकारी

इस प्रकार टाईगर को स्वर्ग मिल जाता है और जाते हुए वह मूछों पर हाथ फेरता हुआ रहस्यात्मक ढंग से बडे बाबू को नमस्ते कहता है।

बडे बाबू भोलाराम के पक्ष मे उसके मुकदमे की पैरवी कर रहे है ताकि उसको स्वर्ग मिल सके। भोलाराम मनुष्य जीवन में एक ईमानदार व्यक्ति था परन्तु बड़ी ही चतुराई व उसकी सहमति से यमराज उसे नर्क में भेजने का आदेश देते है। चारो तरफ यमराज के न्याय की जय जयकार होती है परन्तु बडे बाबू अपना सिर पकड़ लेते है।

नाटक के तीसरे दृश्य मे यमलोक की अदालत के उस परिदृश्य को बताया गया है जिसमें यमराज धरती की प्रसिद्ध सिने तारिका एवं विदेशी तस्करों की एजन्ट सितारा देवी को एक प्रतिभाशाली कलाकार बताते है तथा किस्मती एवं उपकारी द्वारा भी यह तर्क दिया जाता है कि इनकी पत्रावली में संगीत एव नृत्य की एम ए , डबल एम ए तक की परीक्षाओं के प्रमाण पत्र लगे हैं अतः इनका गुणी एव प्रतिभाशाली होना स्वयंसिद्ध है।

इस प्रकार यमराज सितारा देवी की चाह एव मूमल देवी की अनुशसा पर उसे स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी के समान ही यमलोक की अप्सरा रूपमी के पद पर नियुक्ति की घोषणा करते है।

इसी दृश्य मे धरती की प्रसिद्ध डकैन एव दस्यु सुन्दरी मूमल देवी को नर्क की सजा देलाने हेतु बडे बाबू पूरा प्रयास करते हैं परन्तु यमराज उन्हें यमलोक के गृहमंत्री पद पर नियुक्त कर देते है।

इस प्रकार यमलोक मे यमराज रिश्वत लेकर अपनी मनमानी से निर्णय करते है।

नाटक के अन्तिम दृश्य मे यमराज द्वारा ऐसी स्थिति में भगवान के आगमन पर चतुराई से निरीक्षण कराने को दर्शाया गया है। यमराज अपने सहयोगियो एव दुष्ट आत्माओं के सहयोग से एक युक्ति ढूढ निकालते हें जिसके अनुसार स्वर्ग एवं नरक के साईनबोर्ड पलट दिये जाते है। जब भगवान नरक लगे बोर्ड वाले भाग मे सब दुष्ट आत्माओं को एव स्वर्ग लगे बोर्ड वाले भाग में भोलाराम को बैठा पाते हैं तो यमराज की न्याय व्यवस्था की प्रशंसा करते हैं।

इस निरीक्षण दौरे मे यमराज उस बेईमान डाक्टर को भी भगवान से अनुमोदन कराकर स्वर्ग का वैध अधिकारी बना देते हे जिससे उन्होंने रिश्वत ली है।

इस प्रकार इस नाटक मे समसामयिक परिस्थितियो एव वर्तमान व्यवस्थाओं का सटीक चित्रण किया गया है। आधुनिक यमलोग द्वारा विभिन्न आत्माओं की जो प्रस्तुति की गई है वह अतहीन है और भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी आदि की यह श्रृखला लगातार चलती रहेगी।



आधुनिक यमलोक

पहला दृश्य

नाटक के प्रमुख पात्र

1. यमराज : यमलोक के भ्रष्ट अधिकारी एवं आत्माओं का न्याय करने वाले न्यायाधीश।
2. किस्मती : यमराज का सहयोगी एवं यमलोक का रिश्वतखोर चौकीदार।
3. उपकारी : किस्मती का साथी एवं यमराज का सहयोगी।
4. नेकीराम : नकली मोहर बनाने वाला, किस्मती, उपकारी एवं यमराज का सहयोगी।
5. टाईगर : धरती से आयी आत्मा। प्रसिद्ध जेबकतरा एवं गुण्डा।
6. सितारा देवी : धरती से आयी आत्मा। विदेशी तस्करों की एजेण्ट एवं प्रसिद्ध सिने तारिका।
7. मूमल देवी : धरती से आयी आत्मा। दस्यु सुन्दरी एवं प्रसिद्ध डकैत।
8. बड़े बाबू : यमलोक-कार्यालय के अधीक्षक एवं ईमानदार आत्माओं के अधिवक्ता साथी।
9. साधू महाराज : धरती से आयी आत्मा। भगवान का भक्त एवं धार्मिक पिक्चरें देखने का शौकीन साधू।
10. भोलाराम : धरती से आयी आत्मा। ईमानदार एवं कर्मठ व्यक्ति।
11. यमदूत : धरती से आत्माओं को लाने वाला यमलोक का दूत।
12. भगवान : तीनों लोकों के स्वामी



पहला दृश्य

(यमलोक के कार्यालय का दृश्य। सबसे ऊपर सामने की ओर 'कार्यालय यमलोक' का बोर्ड लगा हुआ है जिसके नीचे सबसे पीछे एक बड़ी मेज पर यमराज खर्राटे ले रहे हैं। यमराज की सीट से थोड़ा आगे दायें हाथ को हटकर बड़े बाबू टेबिल पर कुछ काम करने में व्यस्त हैं। स्टेज के दायीं ओर पब्लिक की ओर मुँह करते हुए एक दरवाज़ा है जिस पर स्वर्ग का बोर्ड लगा है एवं दाहिनी तरफ इसी प्रकार का दूसरा दरवाजा है जिस पर नरक का बोर्ड लगा है। स्वर्ग में वे व्यक्ति हैं जो मरने के उपरांत स्वर्ग का सुख भोग रहे हैं। इस विभाग पर पर्दा गिरा हुआ है, केवल बोर्ड दिखाई देता है नरक वाले विभाग में एक बुड्ढ़ा आदमी, जिसका नाम भोलाराम है, उकडू-मूकडू दोनों घुटनों को हाथों में थामे बैठा हुआ है। नरक के बाहर जमीन पर चौकीदार किस्मती और चपरासी उपकारी ताश-पत्ते खेलने में मशगूल हैं।)

किस्मती : (ताश का पत्ता जमीन पर मारते हुए) ये काट्टा...........
(बड़े बाबू के काम में व्यवधान होता है और वे चश्मे के फ्रेम में से निगाहें ऊँची करके दोनों को देखते हैं।)

उपकारी : (उसके कोहनी मारते हुए धीमे स्वर में) बड़े बाबू इधर ही देख रहे हैं।



किस्मती (थोडी ऊँची आवाज मे) तू बडा डरपोक है रे उपकारी क्या कर लेंगे बड़े बाबू हमारा। ईमानदार हैं वे। और हम. .... . (रहस्यात्मक ढ़ंग से हँसता है) तुझे पता होना चाहिए कि यमराज जी से पहले ही सैटिंग है अपनी। धरती पर वे एक राज्य के मुख्यमंत्री थे और मैं एक अफसर था अफसर।

उपकारी : (आँखें फाड़कर गर्दन हिलाते हुए) अच्छा....... .

(फिर धीमे स्वर में)

तभी तो मैं सोचूँ कि तू बड़े बाबू से ड़रता क्यों नहीं। (फिर सहमते से बड़े बाबू और उसके बाद खर्राटे ले रहे यमराज की ओर देखते हुए) लेकिन भैया। मुझे तो अभी बड़े बाबू का भी ड़र लगता है। तू तो जानता ही है कि अभी मेरा प्रोबेशन पीरियड़ पूरा होने में कुछ दिन बाकी हैं। (फिर हाथों को मोड़कर बलशाली होने की एक्टिंग करते हुए) फिर तो मैं भी रावण हो जाऊँगा रावण।

किस्मती : (मुँह बिचकाते हुए) अबे क्या घटिया नाम ले लिया उस ज़मीन के एक छोटे से राक्षस का।

उपकारी : (आश्चर्य से) क्यों भाई। रावण तो बहुत बड़ा राक्षस राजा था और ज़मीन पर तो जब कोई व्यक्ति दुष्टता का काम करता है तो उसको रावण की उपमा दी जाती है।

किस्मती : अरे उपकारी अभी तू ज़मीन से नया-नया आया है। (फिर उसे समझाते हुए) अरे भैया। ये यमलोक है यमलोक,

आगे यहाँ का तेरे मेरे जैसा एक एक कर्मचारी कई सौ रावणों से अधिक गुणी और महाबली है) (नरक में बैठा भोलाराम उन दोनों की बातों को सुनकर उनके पास सलाखों तक आ जाता है।)

भोलाराम : महाबलियों की जय हो। भाई लोगों! मैं एक ईमानदार और गरीब आदमी हूँ। भाई, आप लोगों ने मुझे नरक में बन्द कर रखा है। बड़े बाबू तो कह रहे थे कि मुझे स्वर्ग मिलना था, फिर क्यों मुझे नरक में पटक रखा है। मुझ पर मेहरबानी करो और मुझे स्वर्ग में पहुँचा दो भैया।

किस्मती : अच्छा! स्वर्ग जायेगा? अरे, उस दिन नहीं कहा था तुझे जब तू पहले दिन यहाँ आया था, कि भैया हमारे यमराज जी मुख्यमंत्री थे ज़मीन पर, उनकी आदतें कुछ राजनीतिक हैं (फिर उसे धमकाते हुए) दस्तूरी दी तूने तब?

भोलाराम : कैसी दस्तूरी साहब! मैं तो तब भी नहीं समझा था और अब भी नहीं समझा।

उपकारी : (उसे डंडे से अन्दर ढेलते हुए) सब समझ जायेगा बच्चू सब समझ जायेगा। पहले दिन तो तू कह रहा था कि बाबू। मुझे तो स्वर्ग ही मिलेगा स्वर्ग।

किस्मती : (हाथ नचाते हुए) मैंने ज़मीन पर कोई गलत काम नहीं किया, बड़ा ईमानदार था और मेरी फाईल साफ-सुथरी थी। (एक यमदूत के साथ एक आत्मा का प्रवेश। किस्मती व उपकारी सतर्क होकर ललचायी निगाहों से आत्मा को

देखते हैं)

यमदूत : (प्रवेश करके) गुड मार्निंग बड़े बाबू। ये जमीन का प्रसिद्ध जेबकतरा टाईगर है। इसने अपने जीवन में कोई अच्छा काम नहीं किया और हमेशा लोगों की जेबें काटी हैं। (फिर एक फाईल देते हुए) यह इसकी पत्रावली है। (वापस प्रस्थान करता है।)

किस्मती : (खुशी से) जेबकतरा। बेईमान हुर्रे........।

उपकारी : (किस्मती को अलग ले जाते हुए) मिलेगा हमको माल।

किस्मती : ये तो है अपना मेहमान. ......। (दोनों हाथ मिलाते हैं)

बड़े बाबू : उपकारी!

उपकारी : (पास जाकर) जी बड़े बाबू।

बड़े बाबू : (सीट से उठते हुए) मैं लंच में जा रहा हूँ। (फिर टाईगर की पत्रावली उपकारी को देते हुए) इसकी यह पत्रावली सम्भालकर रखना। मैं लंच से आकर इसे साहब के सामने पेश करूँगा। वे ही इसका निर्णय करेंगे। (फिर किस्मती से) किस्मती। यह एक खतरनाक अपराधी आत्मा है, इसका ध्यान रखना। कहीं भाग न जाये।

किस्मती : (व्यंग्य से) आप निश्चिन्त होकर जायें बड़े बाबू। हम हर चीज का ध्यान रखेंगे।

(बड़े बाबू का प्रस्थान)

किस्मती : (टाईगर से) कहो दोस्त कैसे हो?

(टाईगर डरता है)

उपकारी : (उसके कधे पर हाथ मारते हुए) घबराओ नहीं टाईगर। हम भी जेब कतरे ही हैं।

टाईगर : जी.......मैं कुछ समझा नहीं।

किस्मती : देखो भाई। तुमने ज़मीन पर लागो की जेबें काटी हैं, तो यह तो मानना ही पड़ेगा की तुम इस कला में प्रवीण हो।..... अब तुम्हारी पत्रावली में ये सब बातें साफ-साफ लिखी हुई हैं।

उपकारी : और अब लंच के बाद बड़े बाबू अपनी रिपोर्ट के साथ पत्रावली साहब को पेश करेंगे।

किस्मती : और तुम्हें नरक मिलेगा नरक। सोचो तो। सुबह पड़ेंगे कोडे। दिनभर चक्की पीसनी पड़ेगी और रात को काठ में दे दिए जाओगे। (टाईगर घबरा जाता है।)

उपकारी : (उसकी मनोदशा भाँपते हुए) हाँ........। तुम्हे स्वर्ग भी मिल सकता है।(अन्दर कोठरी में बन्द भोलाराम उनकी तरफ सलाखों तक आता है)

भोलाराम : (खुशी से) मुझे पता था मेरे साथ न्याय जरूर होगा और आप मुझे स्वर्ग में भेज देंगे।

किस्मती : (उसे डंडे से अन्दर ठेलते हुए) अबे चल बे ईमानदार फटीचर। ये मुँह और मसूर की दाल।

उपकारी : यह सब हम इस नये मेहमान को कह रहे हैं।

टाईगर : (कुछ बनते हुए) मैं कुछ समझा नहीं।

किस्मती : अरे बस वही करना पड़ेगा जो तुम जमीन पर थानेदार के

देखते हैं)

यमदूत : (प्रवेश करके) गुड मार्निंग बड़े बाबू। ये जमीन का प्रसिद्ध जेबकतरा टाईगर है। इसने अपने जीवन में कोई अच्छा काम नहीं किया और हमेशा लोगों की जेबे काटी हैं। (फिर एक फाईल देते हुए) यह इसकी पत्रावली है। (वापस प्रस्थान करता है।)

किस्मती : (खुशी से) जेबकतरा। बेईमान हुर्रे.........।

उपकारी : (किस्मती को अलग ले जाते हुए) मिलेगा हमको माल।

किस्मती : ये तो है अपना मेहमान........। (दोनों हाथ मिलाते हैं)

बड़े बाबू : उपकारी!

उपकारी : (पास जाकर) जी बड़े बाबू।

बड़े बाबू : (सीट से उठते हुए) मैं लंच में जा रहा हूँ। (फिर टाईगर की पत्रावली उपकारी को देते हुए) इसकी यह पत्रावली सम्भालकर रखना। मैं लंच से आकर इसे साहब के सामने पेश करूँगा। वे ही इसका निर्णय करेंगे। (फिर किस्मती से) किस्मती। यह एक खतरनाक अपराधी आत्मा है, इसका ध्यान रखना। कहीं भाग न जाये।

किस्मती : (व्यंग्य से) आप निश्चिन्त होकर जायें बड़े बाबू। हम हर चीज का ध्यान रखेंगे।

(बड़े बाबू का प्रस्थान)

किस्मती : (टाईगर से) कहो दोस्त कैसे हो?

(टाईगर डरता है)

उपकारी : (उसके कधे पर हाथ मारते हुए) घबराओ नहीं टाइगर। हम भी जेब कतरे ही हैं।

टाईगर : जी ... ...मैं कुछ समझा नहीं।

किस्मती : देखो भाई। तुमने ज़मीन पर लागो की जेबें काटी हैं, तो यह तो मानना ही पड़ेगा की तुम इस कला में प्रवीण हो।..... अब तुम्हारी पत्रावली में ये सब बातें साफ-साफ लिखी हुई हैं।

उपकारी : और अब लंच के बाद बड़े बाबू अपनी रिपोर्ट के साथ पत्रावली साहब को पेश करेंगे।

किस्मती : और तुम्हें नरक मिलेगा नरक। सोचो तो। सुबह पड़ेंगे कोडे। दिनभर चक्की पीसनी पड़ेगी और रात को काठ में दे दिए जाओगे। (टाईगर घबरा जाता है।)

उपकारी : (उसकी मनोदशा भाँपते हुए) हाँ........। तुम्हे स्वर्ग भी मिल सकता है।(अन्दर कोठरी में बन्द भोलाराम उनकी तरफ सलाखों तक आता है)

भोलाराम : (खुशी से) मुझे पता था मेरे साथ न्याय जरूर होगा और आप मुझे स्वर्ग में भेज देंगे।

किस्मती : (उसे डंडे से अन्दर ठेलते हुए) अबे चल बे ईमानदार फटीचर। ये मुँह और मसूर की दाल।

उपकारी : यह सब हम इस नये मेहमान को कह रहे हैं।

टाईगर : (कुछ बनते हुए) मैं कुछ समझा नहीं।

किस्मती : अरे बस वही करना पड़ेगा जो तुम जमीन पर थानेदार के

साथ करते थे।

उपकारी : जमीन का थानेदार (किस्मती की ओर इशारा करते हुए) यहाँ है हवलदार। (फिर चुटकी से रुपयों की झन्नाहट का इशारा करते हुए) समझ गये न ?

टाईगर : (खुश होता हुआ) अच्छा। यह बात है।
(मोजे में से 100 रु० का नोट निकालकर उपकारी को देता है।)

किस्मती : नोट! वाह भाई वाह! तुम्हारे पास रुपये। यह तो बताओ भैया....... ये रुपये तुम्हारे पास आये कहाँ से?

टाईगर : अब आप लोगों से क्या छुपाना। आप तो अपनी ही बिरादरी के आदमी हो... .. (फिर इतराते हुए) ये रुपये मैंने उस दूत की जेब काटकर पार किये हैं, जो मुझे लेकर यहाँ आया था।

उपकारी : अरे भैया। इससे क्या होगा। यहाँ पर परसेंटेज के हिसाब से चलता है।

टाईगर : कैसे?

उपकारी : भैया बड़े भोले हो। इसमें से 50 प्रतिशत हिस्सा यमराज जी का होगा। अब तुम्हीं बताओ 25 रु० में हमारा गुजारा होगा?
(टाईगर रुपये जेब में रखने लगता है।)

किस्मती : (खुशी से रुपये झटकते हुए) अरे वाह मेरे हीरो! तुम तो बड़े काम के आदमी निकले।

टाइगर　　कैसे?

किस्मती　: (टाईगर को देखते हुए) देखो टाईगर! जमीन पर तुम अपराधी गिरोह के लिए काम करते थे, अब तुम यहाँ पर हमारे लिए काम करोगे। तुम रोजाना इन सब लोगों की जेबें काटोगे और उससे प्राप्त राशि हमें दोगे।

टाईगर　: जो हुक्म आप लोगों का। पर मुझे स्वर्ग तो मिल जायेगा न?

उपकारी　: अरे भैया, बड़े भाई ने जो कह दिया वह लोहे की लकीर है।

टाईगर　: पर बड़े बाबू की रिपोर्ट का क्या होगा? सुना है कि वो तो बड़े सिद्धान्तवादी और ईमानदार आदमी हैं।

किस्मती　: (व्यंग्य से मुस्कराते हुए) तुम चिन्ता मत करो। इस तरह की समस्याओं से निपटने के लिए हमारे पास अलग-अलग तरह के कई नुस्खे हैं।

(सहसा मोहर बनाने वाले का प्रवेश)

मोहरवाला　: जै यमराज जी की साहब लोगों।

किस्मती　: (खुश होता हुआ) अरे आओ नेकीराम आओ।
बड़े मौके पर आए भाई। (फिर उपकारी से) उपकारी! टाईगर की फाईल तो लाना जरा।

नेकीराम　: (खुश होकर झोला जमीन पर रखता हुआ) समझ गया साहब सब समझ गया। बताइये कौन-कौन-सी मोहरें बनवानी हैं।

(उमकारी फाईल खोलकर पन्ने पलटता है।)

उपकारी : पुलिस स्टेशन.... (रूक जाता है)

किस्मती : क्यों क्या हुआ?

उपकारी : बड़े भैया...... जगह का नाम नहीं दिख रहा।

किस्मती : अरे नीचे थानाधिकारी की मोहर लगी होगी जिसमें लिखा होगा जगह का नाम।

उपकारी : नहीं आ रहा भैया यहाँ भी समझ में। मोहर में नाम घिलमिल-सा हो गया है।

नेकीराम : कोई बात नहीं साहेब। तजुर्बेकार आदमी हूँ। यहाँ तक ऐसे ही थोड़े ही पहुँचा हूँ?

किस्मती : क्या मतलब?

नेकीराम : मतलब यह साहब। कि मैं मोहर ही इस तरह की बनाऊंगा कि उसमें जगह का नाम क्लीयर आयेगा ही नहीं।

उपकारी : यानि कि हू बहू नकल। मान गये नेकीराम तुम्हें मान गये।

नेकीराम : (गर्व से गर्दन ऐंठते हुए) मानेंगे कैसे नाहीं साहेब। जमीन पर भी सब लोग हमें मानते थे। (फिर टाईगर की ओर देखते हुए) भैया! सेशन कोर्ट के बाहर हमारी मोहर बनाने की थड़ी थी। बड़े-बड़े अफ़सर लोग हमसे इस प्रकार की सेवाएँ लेते थे।

टाईगर : अच्छा......! यार देखने में तो बच्चे लगते हो।

नेकीराम : अरे भैया.......। आज के जमाने में बच्चे क्या नहीं कर सकते? बच्चे हथियारों के बड़े-बड़े कारखाने चला रहे

हैं, बम बना रहे हैं, फिर मैं मोहरें क्यों नहीं बना सकता? (फिर किस्मती की ओर इशारा करते हुए) इनसे क्या छुपा है अब। ये जमीन पर बड़े थानाधिकारी थे। कई मोहरें बनवायी थी इन्होंने मुझसे। (फिर धीमे से) कई बड़े-बड़े वकील और जज घर पर मेरी सेवाएं लेते थे और मुँह मांगी कीमत मिलती थी मुझे वहाँ पर। (फिर मोहर बनाने लगता है।)

किस्मती : (टालने के उद्देश्य से नेकीराम को देखते हुए) ठीक है ठीक है।तुम अपना काम करो नेकीराम (फिर उपकारी से) उपकारी, पढ़ना तो जरा, क्या लिखा है थानाधिकारी के इस पत्र में।

उपकारी : (पत्र पढ़ता हुआ) भैया इसमें लिखा है कि..... टाईगर इस इलाके का बहुत बड़ा जेबकतरा है और इसके खिलाफ विभिन्न थानों में सैकड़ों आपराधिक मामले दर्ज हैं। टाईगर ने यहाँ के नागरिकों का जीना दूभर कर रखा है।

किस्मती : (उपकारी से) ऐसा करो। साहब की दराज में कुछ छपे हुए फार्म रखे हैं। निकाल लाओ।

उपकारी : (जेब से फार्म निकालते हुए) भैया, ये तो एड्वांस में ही हैं मेरे पास।

किस्मती : अब इसमें नाम की खाली जगह पर टाईगर का नाम लिख दो।

उपकारी : (नाम लिखते हुए) लिख दिया, टाईगर।

किस्मती		अब इसे पढ़ो
उपकारी	:	(पढ़ता है) प्रशंसा-पत्र - मैं थानाधिकारी टाईगर की सामाजिक सेवाओं और पुलिस प्रशासन को सहयोग देने के एवज में यह प्रशंसा पत्र जारी करता हूँ - "टाईगर इस शहर का एक बहुत ही शरीफ और ईमानदार व्यक्ति है। शहर के बदमाशों और जेबकतरों को पकड़वाने एवं पुलिस की सहायता करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।"
किस्मती	:	(खुश होता हुआ) : वाह भाई वाह। (फिर नेकीराम से) मोहर बन गई नेकीराम ?
नेकीराम	:	(मोहर देता हुआ) - हाँ साहब। इमरजेन्सी केस में क्या देर लगती है।
किस्मती	:	(मोहर उपकारी को देते हुए) - लो भैया उपकारी, लगाओ ठप्पा और करो टाईगर का उद्धार। (उपकारी कागज पर मोहर लगा देता है)
टाईगर	:	मान गये साहब मान गये। ऐसा करिश्मा तो कभी पृथ्वी पर भी नहीं देखा था।

(सब हँसते हैं। प्रकाश मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य - समाप्त)

****

दूसरा दृश्य

स्थान - यमराज की अदालत

(यमराज न्यायाधीश की सीट पर विराजमान हैं। बड़े बाबू ईमानदार आत्माओं की तथा किस्मती बेईमान व आपराधिक प्रवृत्ति की आत्माओं की पैरवी कर रहे हैं। उपकारी चपरासी भी पास में ही खड़ा है। एक तरफ स्वर्ग की ओर धरती की प्रसिद्ध दस्यु सुन्दरी मूमल देवी खड़ी है तो इसके पास में ही प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री सितारा देवी, प्रसिद्ध जेबकतरा टाईगर आदि खड़े हैं। दायीं और नरक है जिसमें सलाखों के पीछे धरती का कर्मठ एवं ईमानदार व्यक्ति भोलाराम एवं एक भगवां वेशधारी साधू महात्मा खड़े हैं।)

यमदूत : (ऊँची आवाज में) - आत्मा टाईगर हाजिए हो......।

टाईगर : (समाने आकर अपना हैट उतारकर यमराज का अभिवादन करते हुए) -जै यमराज जी की साहब लोगों।

यमराज : (मुस्कुराकर अभिवादन का मौन उत्तर देते हुए) बड़े बाबू। क्या केस है इनका?

बड़े बाबू : महाराज। इस आत्मा की पत्रावली के शुरू में ब्रीफशीट लगा रखी है जिसमें लिखा है कि यह अपराधी धरती के एक प्रमुख शहर का बहुत ही खतरनाक मुजरिम और जेबकतरा था। इसके खिलाफ वहाँ के स्थानीय थानों में कई अपराधिक मुकदमे दर्ज थे। और इस खरतनाक मुजरिम ने वहाँ के शरीफ और ईमानदार लोगों का जीना दूभर कर

रखा था (टाईगर मूछो पर हाथ फेरता है।)

यमराज : बड़े बाबू आप जो कुछ कह रहे हैं क्या वाकई ठीक है?

बड़े बाबू : हाँ महाराज।

यमराज : भाई देखने में तो ये शरीफ आदमी लगता है। खैर। इसके खिलाफ कोई सबूत है आपके पास?

बड़े बाबू : हाँ महाराज। एक साधू महाराज गवाह हैं इस बात के।

यमराज : (आदेशात्मक स्वर में) उन्हें गवाहों के कठघरे में खड़ा किया जाए।

यमदूत : आत्मा साधू .... हाजिर हो ....।

(किस्मती साधू महाराज को शपथ दिलाने हेतु उपकारी को इशारा करता है। उपकारी एक पोथी साधू महाराज के पास ले जाता है।)

साधू : (पोथी को छूते हुए) –मैं इस गीता.......

उपकारी : (झिड़कते हुए) – गीता नहीं, इसका नाम यमग्रंथ है साधू जी।

साधू : (डरते हुए) हाँ मैं इस यमग्रंथ पर हाथ रखकर शपथ लेता हूँ कि जो भी कहूंगा सच सच कहूंगा सच के अलावा कुछ न कहूंगा। (फिर यमराज की ओर देखता हुए) – महाराज। मैंने एक बार पिक्चर हॉल में इस आदमी को (टाईगर की ओर इशारा करते हुए) किसी की जेब काटकर भागते हुए देखा था। (सितारा देवी, मूमल देवी, किस्मती व उपकारी साधू महात्मा की इस बात पर हँसते हैं)



यमराज : (मेज पर हथौड़ा मारते हुए) – ऑर्डर ....ऑर्डर. ...। (सब आत्माएँ चुप हो जाती हैं।)

बड़े बाबू : (यमराज से) – महाराज इस तरह अदालत में हँसना अदालत की तौहीन है। मेरी अदालत से दरख़्वास्त है कि इन (इशारा करते हैं) अनुशासनहीन आत्माओं और कर्मचारियों के खिलाफ ऐक्शन लिया जाये।

यमराज : भई बड़े बाबू। हँसी तो हमें भी आ रही है इन साधू महाराज की गवाही पर। अरे भाई साधू महात्मा और पिक्चर। हीरो-हीरोइनें। (कुटिल मुस्कान से सितारा देवी को देखते हैं) जमने वाली बात नहीं है यह कुछ। (फिर चुटकी लेते हुए व सितारा देवी को देखते हुए) लगता है .... रसिक मिजाज हैं साधू महाराज।

साधू महाराज:(आपत्ति करते हुए) – क्षमा करें महाराज। मैं जो भी कहता हूँ सत्य वचन है।

किस्मती : (सितारा देवी की ओर देखते हुए) – सत्य वचन है महाराज। (सितारा देवी साधू महाराज की ओर देखकर मुस्कुराती है)

बड़े बाबू : (क्रोध में) – महाराज। यह अदालत है या पिक्चर हॉल। गवाह को अपनी सफाई देने का मौका दिया जाय।

यमराज : ऑर्डर..... ऑर्डर.....। हाँ तो साधू महाराज। क्या आप वाकई पिक्चर देखने गये थे। (फिर चुटकी लेते हुए) – साथ में कौन थी महाराज?

साधू   हाँ महाराज मैं अपने चेले सेवादास के साथ धामिक पिक्चर जय श्रीराम देखने गया था।

यमराज : (क्रोध से हथौड़ा मेज पर मारते हुए) – होश की दवा करो साधू। यह यमराज की अदालत है और यहाँ पर और किसी की जय बोलने की इजाजत नहीं दी जाती। हमारी हद में जय श्री यमराज बोला जाता है, समझे आप। (फिर बड़े बाबू की ओर देखते हुए) – बड़े बाबू। इन पर अदालत की मानहानि का मुकदमा चलाया जाय।

बड़े बाबू : इसे क्षमा करें प्रभु। यह आत्मा अभी यहाँ के नियमों से वाकिफ़ नहीं है।

यमराज : ठीक है ठीक है। (फिर साधू की ओर देखते हुए) – अभी पता चल जाता है कि ये वाकई पिक्चर देखने गये थे या नहीं। (फिर किस्मती से) – हवलदार। इसके चेले सेवादास की गतिविधियाँ पता करो कि क्या उसे वाकई पिक्चर देखने का शौक है।(किस्मती पास में रखी दूरबीन आँखों से लगाकर देखता है।)

किस्मती : (मुस्कुराते हुए और लिप्सा के मारे होठों पर जीभ फिराते हुए) – वाह-वाह महाराज। वाह वाह! सब कुछ दिख रहा है। (अदालत में उपस्थित सभी लोग कुछ जानने को उत्सुक हो उठते हैं।)

यमराज : क्या दिख रहा है तुम्हें हवलदार। आँखों देखा हॉल सुनाओ।

किस्मती : महाराज एक पिक्चर हॉल दिखाई दे रहा है जिसके सामने



गोल गोल सीढ़िया है चालीस पैतालीस सीढ़िया चढ़कर ऊपर एक गोल बरामदा है जिसके दाये बाये दो टिकिट खिड़कियाँ हैं और ऊपर पिक्चर का बहुत बड़ा होर्डिंग लगा है।अब एक साधू वेशधारी किसी के साथ पिक्चर हॉल की सीढ़ियाँ चढ़ रहा है महाराज. ......

साधू महाराज:(बीच ही में बात काटते हुए ऊँची आवाज में) मैं कह नहीं रहा था महाराज, कि मेरा चेला मेरे बताये आदर्शों पर चल रहा है और मुझे जो धार्मिक पिक्चरें देखने का शौक था वह मेरे चेले को अब भी है महाराज।

बड़े बाबू : अब तो मान गये न महाराज कि साधू महाराज की गवाही सच्ची है।

किस्मती : वाह वाह .... मजा आ गया। क्या खूबसूरती है महाराज।

यमराज : (उत्सुकता से) क्या है हवलदार.....? जरा खुलासा करके बताओ।

किस्मती : महाराज अब वे साधू-वेशधारी घूमकर खड़े हो गये हैं' उनके साथ एक चन्द्रमुखी साध्वी भी है महाराज।

यमराज : (सीट से खड़े होते हुए खुशी से) – साध्वी..... चन्द्रमुखी आगे बताओ हवलदार जल्दी बताओ।

(उपकारी व टाईगर भी ललचायी दृष्टि से किस्मती के पास आ जाते हैं।)

किस्मती : (दूरबीन में देखते हुए) हाँ महाराज ऐसी सुन्दरता न कभी देखी न सुनी। साध्वी है चन्द्रमुखी, पतली-छरहरी। उम्र

सोलह से ऊपर रंग चाँदी सा रूप चन्दन सा सिर से पैर तक जैसे साँचे में ढ़ली हुई। बड़ी-बड़ी मदभरी आँखें, लाल-पतले अधर, नुकीली चिबुक, उठा भरा वक्ष, पतली बलखाती कमर, लम्बी बाहें। जब वे चलती हैं महाराज तो लगता है सारी दुनिया ड़ोल रही है।

यमराज : (किस्मती से) हवलदार अबकी बार किसी आत्मा को पृथ्वी से लाना होगा तो हम स्वयं भी साथ जायेंगे। (फिर साधू महाराज की ओर देखते हुए) ऐसा करो, ये दूरबीन साधू महाराज को दो। ये भी तो पहचानें कि क्या यही उनका शिष्य सेवादास है।

(किस्मती दूरबीन साधू महाराज को देता है।)

किस्मती : लीजिए महाराज। एक नजारा आप भी देख लीजिए।

साधू : (दूरबीन में देखते हुए) राम-राम राम-राम ..... (उपकारी उन्हें आँखें दिखाता है। साधू महाराज दूरबीन किस्मती को पकड़ाकर दोनों हाथों से आँखें ढाँप लेते हैं।)

यमराज : क्यों महाराज। क्या यही आपका शिष्य है?

साधू महाराज:महाराज, मत कहो उस दुष्ट को मेरा शिष्य।

बड़े बाबू : इससे क्या हुआ महाराज। वह किसी के साथ भी जाये। पर है तो धार्मिक पिक्चर ही न।

यमराज : अरे हवलदार। जरा देखना तो कौनसी पिक्चर लगी है उसमें (किस्मती दूरबीन लगाकर दुबारा देखता है)

किस्मती : महाराज। पिक्चर का नाम तो कुछ समझ में नहीं आ रहा,

पर पिक्चर हाल पर लगे होंडिग पर अंग्रेजो का एक बहुत बडा ए लिखा है और

यमराज : और क्या हवलदार?

किस्मती : (सितारा देवी की ओर देखता हुआ) और एक खूबसूरत युवती की मजेदार तस्वीर भी है होर्डिग पर महाराज।

यमराज : (उतावलेपन से) ला तो ला जल्दी मुझे दे दूरबीन। निर्णय तो मुझे ही करना है।

(यमराज दूरबीन से देखकर झूम उठते हैं) वाह भाई वाह। (फिर हवलदार से) हवलदार!

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : अभी, इसी वक्त एक दूत को हमारी ओर से आदेश दो कि वह उस चन्द्रमुखी साध्वी की आत्मा को हमारे दरबार में हाजिर करे, शीघ्र।

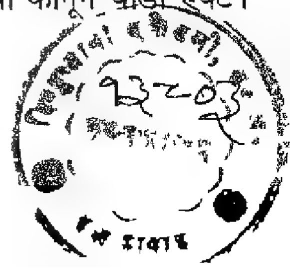
उपकारी : महाराज मैं जाऊं?

यमराज : शटअप।

किस्मती : शटअप। (उपकारी चुप हो जाता है)

बड़े बाबू : (आश्चर्य से) लेकिन महाराज उसके जीवन काल का समय तो अभी बहुत बचा है। हम उसे अभी कैसे ला सकते हैं?

यमराज : (खुश होते हुए) याड़ा एक्ट के तहत बड़े बाबू याड़ा एक्ट (फिर शून्य में देखते हुए झूमने के अन्दाज में) यमलोक की न्याय व्यवस्था के द्वारा बनाया कानून याड़ा एक्ट।



टाईगर : (उत्सुकता से) यह कौनसा एक्ट है महाराज पृथ्वी पर तो कभी नाम नहीं सुना ऐसा। हाँ, टाड़ा एक्ट का नाम जरूर सुना है।

यमराज : (किस्मती को ऊँची आवाज में) हवलदार। इन सभी नई आत्माओं को याड़ा एक्ट के बारे में जानकारी दे दो।

किस्मती : (सबको समझाते हुए) याड़ा एक्ट का मतलब है यमलोक एक्ट फोर डाँवाडोल आत्मा .....।

गाना

किस्मती : आओ भैया तुम्हें बताएँ महिमा याड़ा एक्ट की।
शान्ति नियंत्रण हेतु व्यवस्था जो है यमलोक की।
जय हो याड़ा एक्ट जय हो याड़ा एक्ट। बोलो!

कोरस : जय हो याड़ा एक्ट जय हो याड़ा एक्ट।

किस्मती : धरती पर कोई जीव करे, उद्वेलित किसी परजीव को।

कोरस : धरती पर कोई जीव करे, उद्वेलित किसी परजीव को।

उपकारी : क्राइम माना जाता ऐसा, करता कोई जीव तो।

कोरस : क्राइम माना जाता ऐसा, करता कोई जीव तो।

यमराज : डाँवाडोल करें मन को वे अपराधी होते हैं,
इसीलिए जीवन रहते हम उसे बुला सकते हैं।

किस्मती : बोलो जयश्री यमराज, जयश्री यमराज।

कोरस : जयश्री यमराज, जयश्री यमराज।

किस्मती : धरती की वह साध्वी करती, विचलित सेवादास को,

कोरस : धरती की वह साध्वी करती, विचलित सेवादास को।

[illegible] । [illegible] चन्द्रमुखी महाराज को

कोरस [illegible] चन्द्रमुखी महाराज को

किस्मती . जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट। बोलो

कोरस जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट।

साधू · भगवान भाँति छोड़ चला वह मूरख पिक्चर हॉल को,

कोरस : भगवान भाँति छोड़ चला वह मूरख पिक्चर हॉल को।

साधू मैं भी जाता था पिक्चर पर छोड़ा ना भगवान को,

कोरस : यह भी जाता था पिक्चर पर छोड़ा ना भगवान को।

टाईगर : काश, यहाँ पहले आ जाता सेवा में मैं आपकी,

कोरस : काश, यहाँ पहले आ जाता सेवा में ये आपकी।

टाईगर : धन्य धन्य किस्मती भैया महिमा याड़ा एक्ट की,

किस्मती जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट,

कोरस · जय हो याड़ा एक्ट, जय हो याड़ा एक्ट।

साधू : जयश्रीराम . मन्त्र:- जय हो याड़ा एक्ट,

यमराज · अरे, चुप्प ।

यमराज · खामोश। इस एक्ट के तहत हम पृथ्वी की किसी भी आत्मा को उसके जीवन काल मे कभी भी बुला सकते हैं। यदि हमें लगता है कि पृथ्वी का कोई जीव ऐसा काम करे जिससे किसी की आत्मा डाँवाँडोल हो जाय, तो ऐसी स्थिति पैदा करने वाली आत्मा को हम इस एक्ट के तहत कभी भी यहाँ बुला सकते हैं।

किस्मती . अब वह साध्वी चन्द्रमुखी भी तो सेवादास के मन को

डावाँडोल करके उसे पथभ्रष्ट कर रही है इसीलिए महाराज उसे यहा बुला रहे हैं बड़े बाबू।

यमराज : (दूरबीन में से देखते हुए) वाह वाह पिक्चर हॉल के होर्ड़िंग पर क्या खूबसूरत तस्वीर है।

किस्मती : (चापलूसी के अंदाज में) महाराज। वह हमारे यहाँ की एक अपराधी आत्मा की तस्वीर है।

यमराज : अच्छा . . । हमारे यहाँ ऐसी-ऐसी आत्माएँ भी हैं ? (फिर आदेशात्मक स्वर में) यमदूत ।

यमदूत : (प्रविष्ट होकर) जी महाराज।

यमराज : पहले उस आत्मा को हाजिर किया जाय... ।

यमदूत : (ऊँची आवाज में) आत्मा सितारा देवी हाजिर हो . .. ।
(सितारा देवी का छम-छम की ध्वनि के साथ इतराते हुए प्रवेश)

यमराज : (सितारा देवी को देखते हुए) वाह वाह। काफी कुछ होर्ड़िंग वाली तस्वीर से मिलता-जुलता है। क्या धरती पर आपकी कोई डुप्लीकेट है ?

सितारा देवी : (इतराते हुए यमराज को देखते हुए) नहीं महाराज, वह मेरी ही पिक्चर का एक सीन है।

यमराज : (प्रसन्नता से) क्या कहा। आपकी पिक्चर है वो।

सितारा देवी : हाँ महाराज। गोल्ड़न जुबली पिक्चर थी वह मेरी 'द बर्निंग हर्ट'। देखिए न कितनी सफल पिक्चर थी मेरी वह। पर वहाँ की घटिया व नासमझ सरकार ने उसे एडल्ट पिक्चर माना।

यमराज : काश ऐसा ज्ञानवर्धक और प्रेरणाप्पद पिक्चर हम यहा भी देख पाते

किस्मती : आप चिन्ता न करें महाराज। हम यहा भी ऐसी पिक्चरें बना सकेंगे। (फिर सितारा देवी की ओर देखते हुए) अब हमारे पास पिक्चर की हीरोइन है। सहनायिका है। (स्वय की ओर इशारा करते हुए) और हीरो भी हैं महाराज।

बड़े बाबू : (आपत्ति करते हुए) क्षमा करें महाराज। हम यहाँ पर न्याय करने के लिए एकत्र हुए हैं या कोई पिक्चर बनाने के लिए।

आप मुकदमें पर आएं महाराज और इस टाईगर के अपराधों को मध्यनजर रखते हुए इसे नर्क की सजा दें।

यमराज : बड़े बाबू आप द्वारा पेश किया गया गवाह, यह साधू झूठा व अय्यास साबित हुआ है अतः पहले इस पाखण्डी साधू का निर्णय करना जरूरी है।

(फिर कुछ लिखते हुए) इसलिए हम इस साधू महात्मा को झूंठी गवाही देने व धरती पर अपने शिष्य सेवादास के साथ अय्यासी करने, मादक पिक्चरें देखने और भोली-भाली किशोरियों को फुसलाने के जुर्म में नरक की सजा देते हैं। ले जाओ इसे और नर्क की काल-कोठरी में डाल दो।

किस्मती : (उपकारी से) चलो मामला पक्का हुआ (वे साधू महाराज

को घसीटकर नर्क की कोठरी में डाल आते हैं और साधू महाराज चिल्लाते ही रह जाते हैं।)

बड़े बाबू : महाराज। यह अपराधी टाईगर सजा से बच नहीं सकता। इस फाईल में जमीन के थानाधिकारी की रिपोर्ट है जिसमें टाईगर के जुर्मो का पूरा चिट्ठा मौजूद है। (फाईल उपकारी को देते हुए) मेरी आपसे दरख़्वास्त है कि इन साक्ष्यों के आधार पर इसको नरक की सजा दी जाय।

यमराज : (फाईल पढ़कर सामने देखते हुए) भाई बडे बाबू। इस फाईल में तो थानाधिकारी द्वारा जारी प्रशंसा पत्र लगा हुआ है। (फाईल वापस बड़े बाबू के लिए देते हुए) अब आप स्वयं ही इसे पढ़कर सबको सुनाइये।

बड़े बाबू : (फाईल लेकर पढ़ते हैं पर बोल नहीं पाते कंठ रूक जाता है)

यमराज : रूक क्यों गये बड़े बाबू पढ़िए।

आत्माएँ : हाँ हाँ पढ़िए।

बड़े बाबू : प्रशंसा-पत्र! मैं थानाधिकारी टाईगर की सामाजिक सेवाओं और पुलिस प्रशासन को सहयोग देने के एवज में यह प्रशंसा पत्र जारी करता हूँ -

टाईगर इस शहर का एक बहुत ही शरीफ और ईमानदार नागरिक है। शहर के जेबकतरों और बदमाशों को पकड़वाने में एवं पुलिस की सहायता करने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। (बड़े बाबू हक्के-बक्के रह जाते हैं और

अपना सिर पकड लेते हैं)

यमराज : अब तो साबित हो गया न बड़े बाबू, कि टाईगर कितनी शरीफ आत्मा है (फिर किस्मती से) हवलदार। इन्हें ससम्मान स्वर्ग में ले जाया जाय।

किस्मती : जी महाराज। (किस्मती टाईगर को स्वर्ग में ले जाता है। टाईगर जाते हुए बड़े बाबू से व्यंग्यात्मक लहजे में नमस्ते करता है।)

यमराज : (आदेशात्मक स्वर में) दूसरा केस हाजिर किया जाय।

बड़े बाबू : (यमराज से) महाराज, मेरी आपसे दरख़्वास्त है कि भोलाराम के केस पर पुनर्विचार किया जाय।

यमराज : ठीक है ठीक है। भोलाराम को हाजिर किया जाय। (किस्मती कठघरे में से भोलाराम को आगे लाता है।)

यमराज : हूँ ......, तो तुम ही भोलाराम हो?

भोलाराम : हाँ हुजूर! मैं ही भोलाराम हूँ।

यमराज : बड़े बाबू इसके जमीन पर किये कर्मों का लेखा-जोखा खोलकर हमें सुनाओ।

किस्मती : (उपकारी को एक ओर ले जा र धीमी आवाज में) अबे इसका इन्तजाम कर दिया या नहीं। भाई स्वर्ग में जगह कम है और (भोलाराम की ओर इशारा करते हुए) ये फालतू के आदमी यदि स्वर्ग में पहुँच गये तो इन (सितारा देवी व मृमल देवी की ओर इशारा करते हुए) वी.आई.पी. लोगों को जगह कैसी मिलेगी भाई?

उपकारी : (धीमा आवाज में) आप चिन्ता न करें बड़े भाई। मैंने इन वी आई.पी. लोगों से जितनी भी रिश्वत ली है उसका 50 प्रतिशत हिस्सा यमराज जी को पहुँचा दिया है। अब सब ईमानदार नर्क में जायेंगे।

किस्मती : और सभी बेईमान स्वर्ग में।

(और दोनों वापस अपनी-अपनी जगह पहुँच जाते हैं।)

बड़े बाबू : (फाईल देखते हुए) महाराज। यह व्यक्ति जमीन का एक बहुत ही ईमानदार और कर्मठ जीव रहा है। इसने अपना पूरा जीवन गरीबी में काटा, सदा अपनी गृहस्थी को पालने में कोल्हू के बैल की तरह जुटा रहा। इसने साहूकार से कर्ज भी लिया पर जीते जी उसका सूद ईमानदारी से चुकाता रहा, पूरे गाँव में इसकी ईमानदारी के आज भी चर्चे हैं महाराज। मेरी अदालत से दरख्वास्त है कि ऐसे ईमानदार व्यक्ति को स्वर्ग में स्थान दिया जाये।

यमराज : (कमीज की जेब में हाथ डालकर नोटों को टटोलते हुए) आप भी कमाल करते हैं बड़े बाबू। आप जानते हैं स्वर्ग में सीटें सीमित हैं और हम अपनी न्याय, नीति एवं बुद्धि से स्वर्ग में स्थान उन्हीं को देते हैं जो इसका हकदार है। अतः हम भोलाराम को नर्क में भेजने का आदेश देते हैं।

भोलाराम : (गिड़गिड़ाते हुए) दुहाई है महाराज दुहाई है। मैंने धरती पर सदा ही कष्ट उठायें है पर अपना ईमान कभी नहीं छोड़ा।



बड़े बाबू : हाँ महाराज। इसने धरती पर कभी सुख नहीं देखा अतः इसे अब तो सुख भोगने का अवसर मिलना चाहिए।

यमराज : अरे भई बड़े बाबू। हमारे रहते हुए यमलोक में किसी के साथ नाइंसाफ़ी नहीं हो सकती। (फिर सबकी ओर समझाने के भाव से हाथों का इशारा करते हुए भोलाराम से) भोलाराम, अब तुम ही मेरी बात का जवाब देना। मैं तुम्हें ही अपने स्थान पर न्याय करने का हक देता हूँ, तुम स्वयं ही अपने केस का निर्णय करना।

भोलाराम : (हाथ जोड़ते हुए) जी हुजूर।

यमराज : अब यह बताओ भाई..... मान लो कि हम तुम्हें स्वर्ग दे देते हैं।

भोलाराम : (खुश होता हुआ) मान लिया हुजूर मान लिया। (फिर दोनों हाथ जोड़कर जमीन पर प्रणाम करते हुए।) आप न्याय के पालक हैं।

यमराज : अब सोचो, तुम्हें स्वर्ग में सब सुख-सुविधाएँ मिलती हैं, खाने को मीठे-मीठे व्यंजन और पकवान मिलते हैं तो तुम्हें कैसा लगेगा?

भोलाराम : (खुश होता हुआ) बहुत अच्छा लगेगा हुजूर, आत्मा को बहुत सुकून मिलेगा।

यमराज : अब मान लो कि तुम्हें किसी कारण से (बड़े बाबू की ओर देखते हुए) किसी की गलत पैरवी से ऐसा न्याय मिले कि तुम्हें स्वर्ग से निकालकर नर्क में डाल दिया जाय तो तुम्हें

कैसा महसूर होगा। क्या तुम स्वर्ग के सुख छोड़कर नर्क में सुखी रह सकोगे?

भोलाराम : नहीं हुजूर कभी सुखी नहीं रह पाऊंगा। मेरी आत्मा को बहुत पीड़ा पहुँचेगी प्रभु। यह मेरे साथ अन्याय होगा।

यमराज : (बड़े बाबू व सभी आत्माओं की ओर देखते हुए) ये लो भई, भोलाराम ने खुद ने ही न्याय कर दिया। (फिर भोलाराम की ओर मुखातिब होकर) तो भई भोलाराम जिस प्रकार किसी सुख के बाद किसी दुःख के कारण किसी की आत्मा को पीड़ा पहुँचती है और इस प्रकार का निर्णय करना अन्याय होता है उसी प्रकार यहाँ पर ऐसी बहुत-सी आत्माएँ हैं (बेईमान लोगों की ओर इशारा करते हुए) जिन्होंने धरती पर सदा सुख भोगा है, दुःख का जिन्हें तनिक भी अनुभव नहीं है। उन्हें यदि हमारे दरबार में तुम्हारे जैसों को स्वर्ग देने के कारण नर्क में भेजना पड़ता है तो उनकी आत्माओं को सुख मिलेगा या दुःख भोलाराम बोलो।

भोलाराम : (भोलेपन से) बहुत कष्ट पहुँचेगा महाराज।

यमराज : (बड़े बाबू को देखते हुए) तो फिर हमारा निर्णय न्यायसंगत व नीति सम्मत है बड़े बाबू, कि भोलाराम धरती पर से ही कष्ट सहने का आदि है अतः उसे नर्क में कोई तकलीफ नहीं होगी। (फिर किस्मती से) जाओ भोलाराम को बाईज्जत नर्क में पहुँचा आओ।



ान   महाराज की जय हो

आज अदालत का समय समाप्त हो गया अत कल ाक क

लिए अदालत मुल्तवी की जाता है।

(दृश्य - समाप्त)

****

तीसरा दृश्य

(अदालत पहले के समान ही लग रही है। भोलाराम व टाईगर इस समय नहीं हैं उन्हें क्रमशः नर्क एवं स्वर्ग में भेज दिया गया है। यमराज का बाहर से आगमन। उनके सम्मान में सभी उपस्थित लोग खड़े हो जाते हैं। यमराज के आसन पर बैठने के साथ सब लोग भी बैठ जाते हैं और अदालत की कार्यवाही शुरू होती है।)

यमराज : अदालत की कार्यवाही शुरू की जाय।

यमदूत : आत्मा सितारा देवी हाजिर हो... .।

(सितारा देवी मटकते हुए, इठलाते हुए अदालत में आती है। उसकी चाल के साथ यमराज व सभी बेईमान व अपराधियों की हरकतें भी मचलती हैं।)

सितारा देवी : (उपस्थित होते हुए यमराज की ओर तिरछे नैनों से देखते हुए) क्या हुक्म है मेरे प्रभु (आँखें बंद कर विभोर होने का अभिनय करती है)

यमराज : (आशिकाना अन्दाज में झूमते हुए) मेरे प्रभु ! (फिर सामान्य होते हुए बड़े बाबू से) बड़े बाबू, इनको क्यों इतनी देर से परेशान कर रखा है। इनका केस पहले क्यों नहीं आया?

बड़े बाबू : (किस्मती व उपकारी की ओर देखते हुए) मैं क्या करूँ महाराज।

इन्होंने पहले उस टाईगर का केस रखवा दिया था।

यमराज टाइगर ? कौन टाइगर? (किस्मती की ओर देखते हैं)

किस्मती (अगूठे व तर्जनी उगली से रुपयो की का इशारा करते हुए यमराज से) वही टाईगर प्रभु, वही टाईगर।

यमराज : (समझने का अभिनय करते हुए) टाईगर। अच्छा अच्छा वही समाज सेवी टाईगर। (फिर बड़े बाबू से) बड़े बाबू (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) इनका केस जल्दी डिस्कस करो, ये लोग अधिक कष्ट उठाने के आदि नहीं हैं। इससे हमारी न्याय व्यवस्था को धब्बा लगता है।

बड़े बाबू : (फाईल पढ़ते हुए) प्रभु यह इनकी पत्रावली है। (पत्रावली उपकारी के मार्फत यमराज को देता है।) इस फाईल में साफ-साफ लिखा है कि ये सितारा देवी जो शक्ल सूरत से भोली और मासूम लग रही हैं, धरती पर तस्करों के एक अन्तर्राष्ट्रीय गिरोह की बहुत बड़ी एजेन्ट थी और देश में विदेशी ताकतों की घुसपैठ में इनका बहुत बड़ा हाथ था।

किस्मती : (बीच में ही) लेकिन महाराज ये धरती पर फिल्मों की एक बहुत ही सफल नायिका रही हैं।

बड़े बाबू : (किस्मती की ओर देखते हुए) महाराज इस तरह बीच में हस्तक्षेप करना अदालत की अवमानना है।

यमराज : (बड़े बाबू से क्रोध में) लेकिन बड़े बाबू, किसी मुल्जिम को न्याय देने हेतु तथ्यों व सबूतों की नजरअंदाजी करना न्याय का गला घोंटना है। और कुछ कहना है आपको?

बड़े बाबू : महाराज। ये तस्करों की एक बहुत बड़ी एजेन्ट थी अतः

एक फिल्म निमाता ने इन्हे अपनी फिल्म मे तस्करो की प्रमुख एजेन्ट का रोल दिया जिससे इनकी फ़िल्म चल निकली।

सितारा देवी : चल ही नहीं निकली महाराज। वह उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म रही और सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मुझे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भी किया गया।

यमराज : बड़े बाबू। यह तो हमारे लिए गौरव की बात है कि हम आज इतनी (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) महान् हस्ती को नजदीक से देख पा रहे हैं।

सितारा देवी : प्रभु धरती पर तो मेरे ऑटोग्राफ लेने वालों की लाईन लगी रहती थी। (वहाँ उपस्थित सभी बेईमान लोग भाग भागकर डायरी देते हुए) मैडम आटोग्राफ प्लीज . आटोग्राफ मैडम। (सितारा देवी सबको आटोग्राफ देती हैं.. यमराज भी डायरी निकालकर उठने को होते हैं।)

सितारा देवी : (उन्हें रोकते हुए) ना ना प्रभु ना। आप क्यों तकलीफ करेंगे आटोग्राफ की। आपको तो (कुटिल दृष्टि से देखते हुए) आटोग्राफ मैं रात को घर पर ही आकर दे दूंगी।

यमराज : (खुश होते हुए) ठीक है। ठीक है। (फिर सहज होकर सबसे) हाँ तो सितारा देवी जी के केस पर सब पक्षों को सुनने व साक्ष्यों को देखने के पश्चात् अदालत इस नतीजे पर पहुँचती है कि सितारा देवी जी ने देश के विदेशों से सम्बन्ध प्रगाढ़ करने में और विदेशी उद्यमियों को देश में

पनपने तथा विदेशी मुद्रा के आतरिक प्रवाह मे जो अहम भूमिका निभाई है एवं जो योगदान दिया है वह काबिले तारीफ है। आप सभी जानते हैं कि सितारा देवी जी चोटी की हीरोइन हैं, नृत्य एवं संगीत में प्रवीण हैं। अतः हम इन्हें स्वर्ग में स्थान देते हैं।

बड़े बाबू : लेकिन प्रभु, इन्हें नृत्य एवं संगीत तो बिल्कुल भी नहीं आता है।

यमराज : बड़े बाबू, लगता है आप भी भ्रष्टाचार में लिप्त होते जा रहे हैं। (फिर फाईल बड़े बाबू को दिखाते हुए) यह देखो इनकी फाईल में संगीत और नृत्य की एम.ए., डबल एम.ए. तक की परीक्षाओं की डिग्रियाँ लगी हुई हैं, क्या ये जाली हैं, क्या ये दूकानों पर बिकते हैं? बोलो।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज सर्टिफिकेट और डिग्रियां किसी के संगीत एवं नृत्य सम्बन्धी ज्ञान के मापदण्ड नहीं हैं।

यमराज : फिर क्या मापदण्ड है इनके बड़े बाबू?

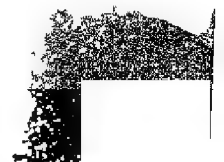
बड़े बाबू : महाराज, किसी को व्यावहारिक रूप से संगीत एवं नृत्य आना ही सच्चे ज्ञान का मापदण्ड है।

यमराज : तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि इन्हें संगीत और नृत्य का व्यावहारिक ज्ञान नहीं है?

बड़े बाबू : बेशक महाराज।

यमराज : (किस्मती से) अरे भाई हवलदार

किस्मती : जी महाराज।



एक फिल्म निर्माता ने इन्हे अपनी फिल्म मे तस्करो की प्रमुख एजेन्ट का रोल दिया जिससे इनकी फ़िल्म चल निकली।

सितारा देवी : चल ही नहीं निकली महाराज। वह उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म रही और सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए मुझे राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भी किया गया।

यमराज : बड़े बाबू। यह तो हमारे लिए गौरव की बात है कि हम आज इतनी (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) महान् हस्ती को नजदीक से देख पा रहे हैं।

सितारा देवी : प्रभु धरती पर तो मेरे ऑटोग्राफ लेने वालों की लाईन लगी रहती थी। (वहाँ उपस्थित सभी बेईमान लोग भाग भागकर डायरी देते हुए) मैडम आटोग्राफ प्लीज.. आटोग्राफ मैडम ; (सितारा देवी सबको आटोग्राफ देती हैं... यमराज भी डायरी निकालकर उठने को होते हैं।)

सितारा देवी : (उन्हें रोकते हुए) ना ना प्रभु ना। आप क्यों तकलीफ करेंगे आटोग्राफ की। आपको तो (कुटिल दृष्टि से देखते हुए) आटोग्राफ मैं रात को घर पर ही आकर दे दूंगी।

यमराज : (खुश होते हुए) ठीक है। ठीक है। (फिर सहज होकर सबसे) हाँ तो सितारा देवी जी के केस पर सब पक्षों को सुनने व साक्ष्यों को देखने के पश्चात् अदालत इस नतीजे पर पहुँचती है कि सितारा देवी जी ने देश के विदेशों से सम्बन्ध प्रगाढ़ करने में और विदेशी उद्यमियों को देश में

पनपने तथा विदेशी मुद्रा के आतरिक प्रवाह मे जो अहम भूमिका निभाई है एवं जो योगदान दिया है वह काबिले तारीफ है। आप सभी जानते हैं कि सितारा देवी जी चोटी की हीरोइन हैं, नृत्य एवं संगीत में प्रवीण हैं। अत: हम इन्हें स्वर्ग में स्थान देते हैं।

बड़े बाबू : लेकिन प्रभु, इन्हें नृत्य एवं संगीत तो बिल्कुल भी नहीं आता है।

यमराज : बड़े बाबू, लगता है आप भी भ्रष्टाचार में लिप्त होते जा रहे हैं। (फिर फाईल बड़े बाबू को दिखाते हुए) यह देखो इनकी फाईल में संगीत और नृत्य की एम.ए., डबल एम.ए. तक की परीक्षाओं की डिग्रियाँ लगी हुई हैं, क्या ये जाली हैं, क्या ये दूकानों पर बिकते हैं? बोलो!

बड़े बाबू : लेकिन महाराज सर्टिफिकेट और डिग्रियां किसी के संगीत एवं नृत्य सम्बन्धी ज्ञान के मापदण्ड नहीं हैं।

यमराज : फिर क्या मापदण्ड है इनके बड़े बाबू?

बड़े बाबू : महाराज, किसी को व्यावहारिक रूप से संगीत एवं नृत्य आना ही सच्चे ज्ञान का मापदण्ड है।

यमराज : तो क्या आप यह कहना चाहते हैं कि इन्हें संगीत और नृत्य का व्यावहारिक ज्ञान नहीं है?

बड़े बाबू : बेशक महाराज।

यमराज : (किस्मती से) अरे भाई हवलदार

किस्मती : जी महाराज।

यमराज   अरे भाई जरा सितारा देवी जी के नृत्य की व्यवस्था तो करो ताकि बड़े बाबू की गलतफहमी दूर हो सके कि इन्हें संगीत और नृत्य बिल्कुल भी नहीं आता है।

किस्मती : अभी लीजिए महाराज।

(नृत्य प्रारम्भ - समाप्त)

यमराज : वाह वाह, वाह वाह। हम आपकी कला से बहुत प्रसन्न हुए। जो मांगना है मांगो देवी।

सितारादेवी : मैं तो आपके चरणों में ही रहना चाहती हूँ महाराज। मैं संगीत, नृत्य और अभिनय में निपुण हूँ और स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी से भी अधिक रूपशील, गुणवन्ती एवं अधिक सीनियर हूँ प्रभु।

यमराज : तो क्या चाहिए देवी आपको?

सितारादेवी : (शर्माते हुए) मुझे आप अपनी सभा में उर्वशी के समान ही रूपसी के रूप में नर्तकी के पद पर नियुक्त कर दें महाराज।

यमराज : (खुश होते हुए) तथास्तु। आज हम आपको इन्द्र की सभा की उर्वशी के समान ही रूपसी की पदवी देकर हमारी रंगशाला में नर्तकी के रूप में नियुक्त करते हैं। आज से आपको केबिनेट स्तर के देवताओं के समान ही सुख सुविधाएँ एवं सम्मान मिलेगा तथा जेड़ श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

बड़े बाबू : (ऐतराज करते हुए) लेकिन प्रभु। इस प्रकार की नियुक्ति

का तो कोई प्रावधान है ही नहीं ऐसा कोई पद तो हमारी सभी मे है ही नहीं

मूमल देवी : (आगे आते हुए) है नहीं तो क्या हुआ जनाब। हर चीज क्या शुरू में होती है? क्या नियम और कानून आदिकाल से ही बनकर अवतरित हुए हैं।

यमराज : (मूमल देवी की ओर देखते हुए) वाह क्या बात है। कैसा विवेचन किया है। आगे जारी रखें देवी। डरें नहीं, हम आपको बोलने का अधिकार देते हैं।

मूमल देवी : प्रभु। यदि पुराने नियम व कानून प्रचलित समाज एवं मौजूदा आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं रहते हैं तो उनमें परिवर्तन किया जाना उचित होता है। नई आवश्यकताओं के अनुसार यदि नये नियम बनाने की एवं वर्तमान नियमों में संशोधन की आवश्यकता की मांग होती है तो ऐसा किया जाना धर्म और नीति के सम्मत होता है और यही सफल राजनीति है प्रभु। दैट्स आल।

(सारी अदालत में वाह-वाह की खुसरा-फुसरी होती है।)

यमराज : ऑर्डर ऑर्डर। (फिर मूमल देवी की ओर देखते हुए) वाह देवी वाह। क्या राजनीतिक दिमाग पाया है आपने। (फिर बड़े बाबू से) बड़े बाबू। क्या इनका भी कोई केस है हमारे यहाँ?

बड़े बाबू : हाँ प्रभु, इनका भी केस है।

यमराज : (क्रोध में) तो इतनी बड़ी विदुषी का केस पहले क्यों नहीं

यमराज अरे भाई जरा सितारा देवी जी के नृत्य की व्यवस्था तो करो ताकि बड़े बाबू की गलतफहमी दूर हो सके कि इन्हें संगीत और नृत्य बिल्कुल भी नहीं आता है।

किस्मती : अभी लीजिए महाराज।

(नृत्य प्रारम्भ - समाप्त)

यमराज : वाह वाह, वाह वाह। हम आपकी कला से बहुत प्रसन्न हुए। जो मांगना है मांगो देवी।

सितारादेवी : मैं तो आपके चरणों में ही रहना चाहती हूँ महाराज। मैं संगीत, नृत्य और अभिनय में निपुण हूँ और स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी से भी अधिक रूपशील, गुणवन्ती एवं अधिक सीनियर हूँ प्रभु।

यमराज : तो क्या चाहिए देवी आपको?

सितारादेवी : (शर्माते हुए) मुझे आप अपनी सभा में उर्वशी के समान ही रूपसी के रूप में नर्तकी के पद पर नियुक्त कर दें महाराज।

यमराज : (खुश होते हुए) तथास्तु। आज हम आपको इन्द्र की सभा की उर्वशी के समान ही रूपसी की पदवी देकर हमारी रंगशाला में नर्तकी के रूप में नियुक्त करते हैं। आज से आपको केबिनेट स्तर के देवताओं के समान ही सुख सुविधाएँ एवं सम्मान मिलेगा तथा जेड़ श्रेणी की सुरक्षा प्रदान की जाएगी।

बड़े बाबू : (ऐतराज करते हुए) लेकिन प्रभु। इस प्रकार की नियुक्ति

का तो कोई प्रावधान है ही नहीं ऐसा कोई पद तो हमारी सभी मे है ही नहीं

मूमल देवी : (आगे आते हुए) है नहीं तो क्या हुआ जनाब। हर चीज क्या शुरू में होती है? क्या नियम और कानून आदिकाल से ही बनकर अवतरित हुए हैं।

यमराज : (मूमल देवी की ओर देखते हुए) वाह क्या बात है। कैसा विवेचन किया है। आगे जारी रखें देवी। डरें नहीं, हम आपको बोलने का अधिकार देते हैं।

मूमल देवी : प्रभु। यदि पुराने नियम व कानून प्रचलित समाज एवं मौजूदा आवश्यकताओं के अनुकूल नहीं रहते हैं तो उनमें परिवर्तन किया जाना उचित होता है। नई आवश्यकताओं के अनुसार यदि नये नियम बनाने की एवं वर्तमान नियमों में संशोधन की आवश्यकता की मांग होती है तो ऐसा किया जाना धर्म और नीति के सम्मत होता है और यही सफल राजनीति है प्रभु। दैट्स आल।

(सारी अदालत में वाह-वाह की खुसरा-फुसरी होती है।)

यमराज : ऑर्डर ऑर्डर। (फिर मूमल देवी की ओर देखते हुए) वाह देवी वाह। क्या राजनीतिक दिमाग पाया है आपने। (फिर बड़े बाबू से) बड़े बाबू। क्या इनका भी कोई केस है हमारे यहाँ?

बड़े बाबू : हाँ प्रभु, इनका भी केस है।

यमराज : (क्रोध में) तो इतनी बड़ी विदुषी का केस पहले क्यों नहीं

भेजा हमारे पास?

बड़े बाबू : (सितारा देवी की ओर इशारा करते हुए) महाराज इनका केस पहले पेश कर दिया था।

यमराज : (सितारा देवी की तरफ देखकर खुश होते हुए) अच्छा अच्छा। (फिर सहज होते हुए) खैर। अब जल्दी इनका केस डिस्कस करो।

बड़े बाबू : (फाईल देखते हुए) महाराज, ये धरती की एक खौफनाक दस्यु सुन्दरी और खतरनाक किस्म की डकैत थी। इन्होंने सैंकड़ों बेगुनाह लोगों की हत्या की और असंख्य लोगों से लूटपाट की थी। कुछ राजनीतिक दलों ने मौके का फायदा उठाते हुए इन्हें संसद सदस्य का टिकिट दे दिया और ये विजयी होकर संसद में पहुँच गई।

मूमल देवी : (बात काटते हुए) महाराज मेरी चुनावी जीत एक रिकॉर्ड था रिकॉर्ड। मैंने अपने प्रतिद्वन्द्वी को दो लाख वोटों से शिकस्त दी थी महाराज।

यमराज : (आश्चर्य से) अच्छा!

बड़े बाबू : महाराज यह इन्सान नहीं बल्कि एक खूनी भेड़िया है और मेरी अदालत से दरख्वास्त है कि इसे नर्क में भेजने की आज्ञा दी जाय।

यमराज : (कुछ लिखते हुए) सभी साक्ष्यों को देखने व दलीलें सुनने के पश्चात् अदालत इस निर्णय पर पहुँचती है कि मूमल देवी एक बहुत ही वीर महिला और कुशल राजनीतिज्ञ



हैं अतः अदालत इन्हे स्वर्ग में भेजने का हुक्म देती है।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज यह खूनी है, डाकू है और इसने अपनी बंदूक से सैंकड़ों लोगों की जान ली है।

यमराज : बड़े बाबू, मुझे अफसोस है कि आप मेरे साथ इतने वर्षो रहकर भी न्याय करना नहीं सीख पाये। (फिर सबको ऊँची आवाज में) बुराई पर विजय वही पा सकता है जिसने नजदीक से बुराई देखी हो। अपराधियों, बदमाशों व दुश्मनों से देश की रक्षा वही कर सकता है जो कभी अपराधी, बदमाश और किसी का दुश्मन रहा हो।

(अदालत में वाह-वाह, बिल्कुल सही कही, सत्यवचन आदि की आवाजें तेज होती हैं।)

यमराज : (मेज पर हथौड़ा मारते हुए) ऑर्डर ऑर्डर। (अदालत में शांति हो जाती है।) अतः हम यह भी निर्णय लेते हैं कि मूमल देवी जैसी वीर और राजनीतिज्ञ महिला की प्रतिभा एवं गुणों का लाभ उठाया जाय। अतः हम सर्वसम्मति से मूमल देवी का यमलोक की रक्षा मंत्री के पद पर मनोनयन करते हैं।

मूमल देवी : (हाथ की बंदूक ऊपर करते हुए) महाराज, जिन्दाबाद महाराज...

सब : जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।

यमराज : बस बस भाई बस। (फिर किस्मती से)
अरे हवलदार!

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : अरे भई आज न कोई चाय आई न पानी।
भई जब से हमारी कैन्टीन वाली आत्मा यहां की आत्माओं की संयुक्त कमेटी के लीडर का चुनाव जीती है तब से हमारी चाय-पानी की व्यवस्था भी गड़बड़ा गई है।

उपकारी : महाराज आप कहें तो अभी उसे ड्यूटी पर तलब करते हैं। आखिर है तो यहाँ की आत्मा ही। हमारे कार्यालय की चाय-पानी कैसे बंद कर सकता है।

यमराज : (हँसते हुए किस्मती से) अरे भई हवलदार यह कर्मचारी अभी नया आया है। इसे भी इस रहस्य से, हमारी कार्यशैली एवं सिद्धान्तों से अवगत करा देना तो।

किस्मती : (उपकारी को अलग ले जाते हुए) - भैया, बड़े भोले हो, जरा भी अक्ल का इस्तेमाल नहीं करते।

उपकारी : कैसे?

किस्मती : भैया..। ये राजनेता किस्म की आत्माएँ बड़ी प्रभावशाली होती हैं। इनमें जन्मजात प्रतिभा होती है।

उपकारी : मैं समझा नहीं।

किस्मती : कई-कई आत्माओं में राजनैतिक पक्ष बड़ा प्रभावशाली होता है। पर अवसर की तलाश में ऐसी प्रतिभाएँ अन्दर ही अन्दर कसमसाती रहती हैं।

यमराज : (सीट से उठकर नीचे आते हुए सबकी ओर देखते हुए किस्मती से) अब देखा तो। क्या नाम था हवलदार, उस

केन्टीन वाली लीडर आत्मा का

किस्मती महाराज घीसू

उपकारी : (हँसते हुए) अरे भैया ये कैसा नाम हुआ।

किस्मती : अरे भाई। धरती पर वह बड़ा गरीब आदमी था। घिसट-घिसटकर जीवन रेग रहा था, अतः उसका नाम पड़ गया घीसू। (यमराज, के साथ उपकारी, टाईगर व अन्य सभी हँसते हैं)

यमराज : अब भाई इसमें प्रतिभा थी पर धरती पर वह कुछ नहीं कर सका। अपने उसूलों व ईमानदारी में जकड़ा रहा अतः समय से पूर्व ही हमारी सेवा में आ गया। (फिर टाईगर की ओर कुटिलता से मुस्कराकर देखते हुए) यहाँ आकर उसने परिस्थितियों से समझौता कर लिया और (किस्मती की ओर देखते हुए) उसने हमारे हवलदार के मार्फत अपने हृदय परिवर्तन की बात हमें बता दी। बस हमने उसे लीडरी का टिकिट दे दिया।

किस्मती : (सबकी ओर देखते हुए) और वह घीसू निर्विरोध निर्वाचित होकर पी वाई.एच डी ए बन गये।

सब . पी.वाई एच.डी ए., यह क्या हुआ?

किस्मती : भाई यमलोक में आधुनिक किस्म के कई बड़े बड़े पद हैं।

यमराज : अरे भई इन्हें समझाओ जरा। नई-नई आत्माएँ हैं।

किस्मती : जी महाराज । भई पी.वाई एच डी.ए का मतलब है - प्रेसीडेंट आफ यमलोक आनेस्ट एण्ड डिसओनेस्ट आत्मा....।

सब : वाह वाह

टाईगर : पर वह बेईमान आत्मा बेईमान व ईमानदार दोनों आत्माओं को लीडर कैसे बन गई।

किस्मती : (व्यंग्य से देखते हुए) तो क्या लीडर ईमानदार आत्माएँ बनती है? (फिर उसे समझाते हुए) भाई यहाँ ईमानदार आत्माओं की लीडर भी बेईमान आत्मा ही होती है।

उपकारी : (किस्मती से) पर भैया। बात तो चाय-पानी की हो रही थी।

यमराज : (कुछ याद करते हुए) ओह हां। हां तो भई अब घीसाराम जी नेता बन गए, अतः हम उनसे कोई काम कैसे करवा सकते हैं। इसलिए बस। यहां की चाय-पानी की व्यवस्था गड़बड़ा गई।

टाईगर : पर महाराज वह अभी भी यहां की आत्मा है। फिर आप उससे काम क्यों नहीं ले सकते।

यमराज : अरे भैया। दीन-दुनिया के प्रचलित नियमों की खबर रखते हो या नहीं (फिर किस्मती की ओर देखकर सबकी ओर मुखातिब होकर) भैया जब कोई व्यक्ति लीडर बन जाता है तो वह अपने मौजूदा कार्यभार से अप्रत्यक्ष में मुक्त हो जाता है।

किस्मती : (उपकारी से) भैया अब यदि घीसूलाल जी जैसे लीडर चाय बनाकर ही पिलाते रहे तो फिर लीड़र बनने का लाभ



ही क्या, और फिर वे देश की सेवा कैसे करेंगे?

यमराज : (सबसे) अरे भाई। अब धरती पर भी हर सरकारी विभाग में लीड़र होते हैं जो लीड़र बनने के बाद भी नियुक्त तो अपने पद पर ही होते हैं। पर तब वो उस काम को करते थोड़े ही हैं।

किस्मती : (शर्माते हुए) हां भाई। लीड़री की मर्यादा का भी तो ध्यान रखना ही पड़ता है।

टाईगर : कैसे?

यमराज : अरे अब ड्राईवरों के लीडर को कभी बस चलाते देखा है?

सब : नहीं ।

यमराज : सरकारी कार्यालयों के लीड़रों को कभी काम करते देखा है?

आत्माएँ : नहीं।

किस्मती : शिक्षकों के लीड़र के कभी पढ़ाते देखा है?

सब : नहीं।

बड़े बाबू : क्षमा करें महाराज। ये बात सत्य नहीं है कि लीड़रों को काम करते नहीं देखा।

यमराज : भई बडे बाबू। आप ठीक कह रहे हैं और ये सब भी ठीक कह रहे हैं।

किस्मती : और महाराज भी ठीक कह रहे हैं।

बड़े बाबू : चुप्प।

यमराज : हां बड़े बाबू। लीड़र काम करते हैं, परहित का। यदि वे

अपनी पूर्व नियुक्ति वाले काम लीड़र बनने के बाद भी करते रहे तो एक लीड़र अपने कर्तव्य का पालन कैसे कर पायेगा।

बड़े बाबू : पर महाराज, बात कैण्टीन व्यवस्था की हो रही थी।

यमराज : ठीक है, ठीक है। (फिर किस्मती से) हवलदार!

किस्मती : जी महाराज।

यमराज : भाई तुम एक यमदूत को लेकर स्वयं धरती पर जाओ और ऐसी आत्मा को पकड़कर लाओ जो यमलोक की कैण्टीन-व्यवस्था संभाल सके।

किस्मती : जी महाराज। अबकी बार किसी हलवाई को पकड़कर लाते हैं जो चाय-काफी, मिठाई आदि सभी तैयार कर खिलायेगा-पिलायेगा।

(सब हँसते हैं।)

(दृश्य - समाप्त)

****



चौथा दृश्य

(बाजार का दृश्य। मिट्ठन हलवाई कड़ाई में दूध घोंट रहा है। पास में ही उसका नौकर बदलू कुछ काम कर रहा है। हवलदार किस्मती यमदूत के साथ बाजार के एक कोने में छुपकर खड़ा मिट्ठन हलवाई की दूकान का दृश्य देख रहा है।)

मिट्ठन : (बदलू से) बदलू, अरे ओ बदलू!

बदलू : (दौड़कर आते हुए) जी मालिक।

मिट्ठन : देख तो बेटा, वो बर्तनों की नाली के पास मर्तबान में जो थोड़ी-सी बर्फी रखी है, मुझे ला दे तो।

बदलू : (बुरा सा मुँह बनाते हुए) क्या करेंगे मालिक उसका? (फिर दर्शकों की ओर देखते हुए) वह तो दो महिने पुरानी हो गई है। उसमें से आधी तो चीटिंयां उठाकर ले गई हैं और बाकी के लिए उसमें पड़े कीड़ों और चीटिंयों में (रस्साकसी का इशारा करते हुए) जोर आजमाईश चल रही है।

मिट्ठन : (दबी आवाज में) अबे मेरे बाप धीरे बोल। कहीं वह निसपेटर का बच्चा आ गया तो रेट से दुगने पैसे ले जायेगा।

बदलू : कौन निसपेटर मालिक। और कैसी रेट?

मिट्ठन : अरे देख बेटा, मेरी बात ध्यान से सुन। अब मेरे बाद तू ही उत्तराधिकारी है इस दूकान का। मेरा तो बुढ़ापा है, पता नहीं कब बुलावा आ जाय।

(किस्मती यमदूत की ओर देखकर मुस्कुराता है)

बदलू : कैसी बातें कर रहें हैं मालिक। (फिर दीवार पर टंगी हीरोईन की तस्वीर की ओर देखते हुए व्यंग्य से) अभी तो आपकी जवानी है।

मिट्ठन : (झेंपते हुए) हाँ सो तो है, पर बेटे मैं कभी दूकान पर न रहूँ तब की बात है। (फिर पास में आने का इशारा करते हुए धीरे से) सरकारी विभाग का एक फूड़ निसपेटर।

बदलू : निसपेटर नहीं, मालिक इंस्पैक्टर।

मिट्ठन : अरे हां वही। वह हर महिने दूकान का निरीक्षण करने आता है।

बदलू : यह तो अच्छी बात है मालिक। इससे हमारी दूकान की इमेज बढ़ती है।

मिट्ठन : अरे इमेज बढ़ने की दुम (फिर जेब की ओर इशारा करते हुए) ये जेब तो कटती है न।

बदलू : कैसे?

मिट्ठन : (उसके पलटा मारते हुए) अबे वो ही तो बता रिया हूँ। साला सुनता ही नाहीं।

बदलू : जी मालिक, सुनाएँ।

मिट्ठन : अब भाई वह हर महिने यहाँ आकर 500 रु० ले जाता है।

बदलू : क्यों ले जाता है मालिक वो 500 रुपये। क्या वह सब दूकानों से ले जाता है।

मिट्ठन : हाँ भाई, सबसे ले जाता है।

बदलू तो क्या वह सरकार से तनख्वाह नही लेता? (फिर दर्शको की ओर देखते हुए) अच्छा समझ मे आ गई बात सरकार से बेचारा लेगा भी कैसे! अपनी डयूटी के चक्कर में दिन भर तो फील्ड़ में मारा-मारा फिरता है। (फिर उंगलियों पर गिनकर उछलते हुए मिट्ठन की ओर देखते हुए) वाह मालिक वाह। बड़ी अच्छी तनख़्वाह है इन्सपैक्टर साहब की तो।

मिट्ठन : कैसे भाई?

बदलू : 500X30=15,000 रु० प्रतिमाह।
(फिर मिठाइयों की ओर इशारा करते हुए) और जहाँ जाये उसी दूकान पर दूध मिठाई फ्री.....(उछलता है)

मिट्ठन : (उसे डांटते हुए खीझ के साथ) अबे जेल जायेगा क्या फूड़ निसपेटर को ये मिठाईयां खिलाकर।

बदलू : (भोलेपन से) कैसे मालिक?

मिट्ठन : (डांटते हुए) अबे, पहले वो मर्तबान की बर्फी उठा ले जा।
(बदलू एक हाथ से नाक बन्द करते हुए बर्फी का मर्तबान लाकर मिट्ठन को दे देता है।)

बदलू : (मर्तबान जमीन पर रखते हुए) ये लीजिए मालिक।

मिट्ठन : अरे, इस कड़ाहे में डाल दे।

बदलू : लेकिन मालिक, इससे तो कड़ाही की सारी बर्फी बेकार हो जायेगी।

मिटठन (सिर पर हाथ मारते हुए) अरे बुद्धू, यह सोच इससे मर्तबान की सारी बर्फी अच्छी हो जायेगी।

(मिट्ठन स्वयं ही मर्तबान कड़ाही में उलट देता है)

बदलू : पर मालिक, इसे खरीदेगा कौन?

मिट्ठन : अरे तू देखे जा हमारी दूकान के रंग-ढंग। (फिर बुरा सा मुँह बनाते हुए) आजकल वो मेरा नालायक बेटा है न, वो अम. बी.ए. कर रहा है। (फिर आह भरते हुए) काश वो ये फालतू की डिग्रियों के चक्कर में न पड़कर मेहनत करता तो पाण्डे जी के लड़के की तरह बी ए. ही कर लेता तो बिरादरी में मेरा नाम ऊँचा हो जाता।

बदलू : (हँसते हुए) अरे मालिक बी.ए.के बराबर परीक्षा, बी.कॉम. तो वो पहले ही पास कर चुका (फिर गर्व से ऐंठते हुए) हाँ, मुझसे कम नम्बर जरूर थे उसके।

मिट्ठन : तो क्या तू बी.ए. पास है?

बदलू : हाँ मालिक, और आपके लड़के से ज्यादा परसन्टेज हैं, बी.कॉम. में।

मिट्ठन : अबे तो यहाँ कप-प्लेट क्यों धो रिया है।

बदलू : क्या करें मालिक। बूढ़े पिता जी ने इस आशा में मुझे पढ़ाने के लिए घर तक बेच दिया कि शायद पढ़ लिखकर नौकरी मिल जाय। परन्तु बी.कॉम. प्रथम श्रेणी से पास होने के बाद भी नौकरी नहीं मिली तो बूढ़े माता-पिता और अपना पेट भरने के लिए मुझे यह सब करना पड़ रहा है।

(ढग से हसता है)

(फिर व्यग्य से) और हाँ मालिक आपका लडका अम बी ए नहीं एम.बी.ए. कर रहा है।

मिट्ठन : (झेंपते हुए डाटते हुए) अच्छा। मेरी मजाक उड़ाता है। अभी नौकरी से निकाल दूंगा।

बदलू : (शरारतपूर्वक) लेकिन मालिक, आपने अभी-अभी मुझे फूड़ इन्स्पैक्टर वाली बात बताई है।

मिट्ठन : (गद्दी से उठकर नीचे आते हुए उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) बेटा बदलू, मैं तो मजाक कर रिया था।

बदलू : ठीक है ठीक है मालिक, माइंड योर बिजनिस। और हाँ मेरे स्टैन्डर्ड का भी अपनी बोलचाल में ध्यान रखा करो, (उसकी ओर घूमकर) और हाँ, आपका वो लड़का अम.बी.ए. नहीं एम.बी.ए. कर रहा है।

मिट्ठन : (प्यार के लहजे में) अरे हाँ वही....... वही कर रहा है वह। कहता है..... इससे उसे (फिर बदलू की ओर देखते हुए कुछ सहमे से कुछ याद करते हुए) म म (फिर अटकते से) मार्केटिंग का ज्ञान होगा, बड़े-बड़े व्यापार चलायेगा। नालायक कहीं का। (फिर दर्शकों से) भैया.....। ऐसी पढ़ाइयों से चली हैं कहीं दूकानदारी।

(फिर रुकते हुए) हम अंगूठा छाप हैं, पर तू देखना अभी बेच देंगे सारी की सारी बर्फी और वह भी डबल दामों में।

बदलू : (आश्चर्य से) कैसे मालिक?

मिट्ठन : अरे बेटा, दीपावली का त्यौहार है, कोई भाव-ताव नाहीं पूछता। (फिर उसे समझाते हुए दर्शकों से) लाईनें इतनी लम्बी-लम्बी रहती हैं कि कोई क्वालिटी भी नहीं देखता।

बदलू : पर मालिक यह सारी बर्फी तो जहर हो गई, इससे आदमी मर जायेंगे।

मिट्ठन : अरे बेटा, मरेंगे तो तब, जब वो खायेंगे मिठाई।

बदलू : क्या मतलब?

मिट्ठन : (उसके कंधे पर हाथ रखकर समझाते हुए दर्शकों की ओर मुखातिब होकर) - अरे बेटा..., (फिर दर्शकों से) इस कमरतोड़ महंगाई में लोग-बाग मिठाई खाने के लिए थोड़े ही खरीदते हैं।

बदलू : (भोलेपन से)-मैं समझा नहीं।

मिट्ठन : (दर्शकों की मुखातिब होकर)-भैया, आज की इस महंगाई के युग में लोग-बाग, मिठाई या तो परम्परा निभाने के लिए मजबूरन पूजा के लिए खरीदते हैं।

बदलू : (बीच में बात काटते हुए) तो क्या पूजा के बाद वे मिठाई खाते नहीं?

मिट्ठन : नहीं रे। थोड़ी-थोड़ी चख लेते हैं जिसका उन पर दुष्प्रभाव पड़ता नहीं, आजकल मिलावटी वस्तुएं खा-खा कर इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि असली वस्तु का उन पर जहर का सा असर होने लगता है।



बदलू　　　या फिर?

मिट्ठन　　: या फिर-अपने फ्रीज में रखने के लिए खरीदकर ले जाते हैं।

बदलू　　: केवल रखने के लिए! तो क्या वे उन्हें खाते नहीं?

मिट्ठन　　: अरे बुद्धू। बड़े-बड़े घरों में लोग बाग ठंडे की बोतलें और बर्फी की चक्कियां इसलिए जमाकर रखते हैं, ताकि जब मेहमान आयें तो उनके सामने उनकी नुमाईश कर सकें।

बदलू　　: तो क्या मेहमान हमारी दूकान की मिठाई खाने से बीमार नहीं होते?

मिट्ठन　　: हाँ भाई, यहाँ पकड़ी तूने बात। भैया, मेहमान ऐसी मिठाइयों को फोकट की समझकर खूब चटखारे ले लेकर खाते हैं और घर जाकर बीमार पड़ जाते हैं।

बदलू　　: तो क्या वे मेजबान को कोसते नहीं इसके लिए।

मिट्ठन　　: नहीं रे, वे समझते हैं उन्हें कोई अंग्रेजी बीमारी हो गई और सीधे अपने फमेली डाक्टर के पास भागते हैं, (फिर हँसते हुए) और उनके ये विलायती डिग्री पास डाक्टर लम्बी चौड़ी जाँच करने और हजारों रुपये के कई टेस्ट कराने के बाद यह घोषणा करते हैं कि उनके पसेन्ट को डाबेटीज.....,

बदलू　　: (बीच में बात काटते हुए) डाबेटीज नहीं मालिक डायबेटीज।

मिट्ठन　　: अरे हाँ वही तो, वो हो गई है। बड़े गर्व से बताते हैं लोगों को। और बड़े-बड़े डॉक्टरों को भी पता नहीं लग पाता कि

यह तो हमारी इस (बर्फी की ओर इशारा करता है) दवाई का चमत्कार है।

(सहसा बाहर से कुत्ता भौंकता है)

भौं.....भौं......

बदलू : (डरकर पास आते हुए) मालिक, मालिक, कुत्ता आ गया।

मिट्ठन : (लापरवाही से हँसते हुए) अबे ड़र गया क्या? बेटा! इन कुत्तों से निपटने के लिए हमारे पास अत्याधुनिक किस्म के अलग-अलग नुस्खे हैं।

बदलू : मालिक, लट्ठ लाऊं?

मिट्ठन : अरे बेटा। ये साधारण किस्म के कुत्ते नहीं हैं। हमारी दूकान शहर की एक पोश कॉलोनी में है और ये कुत्ते यहाँ के प्रभावशाली अधिकारियों के हैं।

बदलू : मालिक। तो क्या ये डंडे से नहीं ड़रते?

मिट्ठन : अरे बेटा! जब पुलिस का डंड़ा तक इनसे ड़रता है तो ये तेरे इस डंडे से क्या डरेंगे। (फिर उसे पुचकारने के अंदाज में आदेश देते हुए) जा बेटा जा, रख दे इस डंडे को किसी कोने में। किसी शरीफ आदमी को धमकाने के लिए काम में आयेगा।

बदलू : तो मालिक अब ये कुत्ता कैसे भागेगा?

मिट्ठन : अरे मरवायेगा क्या? पहले अपनी भाषा सुधार। अफसरों के कुत्ते को कुत्ता कहता है, कहीं इसने उनसे हमारी शिकायत कर दी तो।

बदलू तो क्या कहू मालिक उसे

मिटठन टामी टाईगर या शेरा

बदलू : जो कुछ भी हो मालिक। पर अब ये भागेगा कैसे?

मिट्ठन : भाषा। भाषा के चमत्कार से।

बदलू : (दोनों हाथों को ऊपर करते हुए) यह कैसा चमत्कार है ऐ मेरे मालिक।

मिट्ठन : (उसे डाँटते हुए) अबे तुर्कीस्तान के नवाब, मालिक ऊपर नहीं नीचे है।

बदलू : सॉरी मालिक।

मिट्ठन : (गर्व से) बेटा। मुझे कुत्ते की आवाज निकालनी आती है। मेरी आवाज सुनकर ये टॉमी लोग समझते हैं कि इनका कोई सवा सेर दूकान के अन्दर बैठा है और वे ड़रकर भाग जाते हैं।

बदलू : मालिक, क्या आप सही कह रहे हैं।

मिट्ठन : हाँ भाई, चल मैं तुझे भी इन टॉमियों को भगाने का नुस्खा सिखाता हूँ।

(कुत्ते की आवाजें निकालना सिखाता है)

बदलू : (खुशी से उछलते हुए) वाह मालिक वाह। आप तो बहुत बड़े कुत्ते निकले। (फिर दर्शकों की ओर मुखातिब होकर स्वगत) अब मैं भी आगे पढ़ने का चक्कर छोड़कर कुत्ते, बिल्ली, गधे आदि की आवाजें निकालना सीखूँगा। ये ही असली पढ़ाई है जो जीवन में काम आयेगी।

मिटठन (बदलू से) अरे आज निसपेटर जी आने वाले हैं जा तो ऊपर बरनी मे स एक प्लेट मिठाई निकाल ला।

बदलू : ऊपर वाली क्यों मालिक? हम सबको तो (नीचे रखी बर्फी की ओर इशारा करते हुए) - इसमें से देते हैं।

मिट्ठन : अरे बुद्धू। वी.आई.पी. लोगों के लिए मिठाई अलग प्रकार की होती है। (फिर कुछ सोचते हुए झटके से) और देख, दूध खत्म हो गया है, पर कोई लेने या पीने आये तो मना मत करना, इससे ग्राहकी टूटती है।)

बदलू : तो क्या करें मालिक?

मिट्ठन : अरे वो बाल्टी में जो दूध रखा है, उसमें से दे देना सबको।

बदलू : लेकिन मालिक, उसमें से तो बिल्ली पी गई है, वह बिल्ली का झूंठा हो गया है।

मिट्ठन : अरे तो क्या बिल्ली जीव नहीं होती, उसमें आत्मा नहीं होती? देख भैया, हमें अंग्रेजी आये या न आये, संस्कृत के हम बहुत बड़े विद्वान हैं (फिर उसे समझाते हुए) भैया...... संस्कृत में कहा है-

मातृवत पर दारेषु, (बदलू को समझाते हुए हीरोइन की तस्वीर की ओर इशारा करता है)

परद्रव्येषु लोष्ठवत। (अपने गल्ले की ओर इशारा करता है)

आत्मवत् सर्वभूतेषु (हाथों से बिल्ली की आकृति बनाकर उसे बताता है)

य पश्यति स पण्डित (गर्व से स्वयं की ओर इशारा करता है)

बदलू : क्या मतलब?

(सहसा फूड इन्स्पेक्टर का प्रवेश)

इन्स्पैक्टर : (प्रवेश करते हुए) नमस्कार सेठजी। कहिए; कैसा चल रहा है?

मिट्ठन : (चापलूसी के अंदाज में खींसें निपोरते हुए) आइए हुजूर आइए। धन्य भाग हमारे, जो दीपावली के इस अवसर पर आप यहां पधारे। (मिठाई की प्लेट आगे करता है)

इन्स्पैक्टर : (मिठाई का एक पीस मुँह में डालते हुए) काफी दिन हो गये थे सेठ साहब। सोचा, दीपावली की राम राम भी हो जायेगी और नौकरी का दायित्व भी पूरा हो जायेगा।

मिट्ठन : (बही-खाते सामने रखते हुए)-हाँ हुजूर क्यों नहीं। कानून की मदद करना व सरकारी काम में सहयोग देना (पाँच सौ का नोट व एक मिठाई का डिब्बा देता है) तो हमारा धर्म है, कर्तव्य है।

इन्स्पैक्टर : (खुशी से डिब्बा लेते हुए बही-खातों पर हस्ताक्षर करता हुआ) अच्छा भाई सेठ साहब अब हम चलते हैं (फिर रुपयों को जेब में रखते हुए खुश होता हुआ) यह दीपावली का पर्व आपके व आपके परिवार के लिए मंगलमय हो।

(बदलू एकटक ठगा-सा यह सब देखता रह जाता है और फिर एकाएक बेहोश होकर गिर पड़ता है)

मिटठन (उसे घसीटकर अन्दर ले जाते हुए एकाएक रूककर दर्शका की ओर देखते हुए) - लगता है लड़के ने ग्राहकों वाली मिठाई खा ली है।

(सहसा यमदूत का प्रवेश)

यमदूत : (प्रवेश करते हुए) मिट्ठन सेठ! तुम्हें यमराज ने तलब किया है, अभी, इसी वक्त।

मिट्ठन : (यमदूत को देखकर डरते हुए) क..... कौन हो तुम?

यमदूत : मैं एक यमदूत हूं।

किस्मती : (प्रवेश करते हुए) डरो नहीं सेठ। तुम्हारा उद्धार हो गया।

मिट्ठन : मैं समझा नहीं।

किस्मती : देखो भाई। तुम्हारे जैसे योग्य, मेहनती एवं अपने फर्ज के प्रति ईमानदार लोगों के लिए यह पृथ्वी उपयुक्त स्थान नहीं है।

मिट्ठन : (हाथ जोड़ते हुए) तो फिर कौन-सी जगह उपयुक्त है अधिकारी जी?

(दूत अदब से सावधान मुद्रा में खड़ा रहता है)

किस्मती : स्वर्गलोक, सेठ स्वर्गलोक। चलोगे?

मिट्ठन : (आश्चर्य एवं खुशी से) हैं। स्वर्गलोक। क्या आप जो कुछ कह रहे हैं सही है, क्या मुझे वास्तव में स्वर्ग मिल जायेगा?

किस्मती : हाँ सेठ। हमारे यमराज तुम्हारी सेवाओं व उसूलों से बहुत प्रसन्न हैं।, अतः तुम्हें अभी यमलोक में बुलाया है।

मिटठन   लकिन अधिकारा जी मैने अभी तक जा कुछ कमाया है मरा जा धन हे उसका क्या होगा ? मेरा तो कोई बेटा पोता भी नहीं ह जो उसका भोग सके।

किस्मती · (खुश होता हुआ) तुम उसकी चिन्ता मत करो सेठ। वह सब भी तुम अपने साथ ले चलो। उसका उपभोग तुम वहा पर कर सकोगे (फिर उसकी ओर मुखातिब होकर नीचे झुकते हुए) जाओ, तुम वह सब ले आओ।

मिट्ठन . (जाते हुए खुश होता हुआ स्वगत) – मैं अपने धन का उपभोग वहाँ पर भी कर सकूँगा। वाह प्रभु वाह। (जाता है और धन की पोटली ले आता है)

किस्मती : (झटके से पाटली लेकर अपने कब्जे में करते हुए) लेकिन सेठ, अब यह पोटली तुम स्वयं लेकर नहीं जा सकते। अब इसे हम ही ले जा सकते हैं। और तुम, तुम एक आत्मा के रूप में हमारे साथ चलोगे।

मिट्ठन : (पोटली की ओर ललचायी निगाहों से देखते हुए) ले लीजिए साहब, ले लीजिए, पर मुझे स्वर्ग तो मिल जायेगा न।

किस्मती : अरे भाई, इसीलिए तो हम स्वय तुम्हें लेने आये हैं। (फिर यमदूत से) चलो भाई दूत, ले चलो सेठजी को।

यमदूत   (ऊँची आवाज में) आत्मा मिट्ठन सेठ प्रस्थान करो..... (सहसा बदलू आवाज सुनकर होश में आ जाता है और आँखें मलते हुए फटी-फटी आँखों से सबको जाते हुए देखता रह जाता है।

(दृश्य – समाप्त)

पाचवा दृश्य

(यमराज आसन पर विराजमान हैं एवं कैंची से मूंछ के बाल काट रहे हैं। बड़े बाबू अपनी सीट पर बैठे फाईलों को उलट-पुलट कर देख रहे हैं।)

यमराज : (बड़े बाबू से) बड़े बाबू।

बड़े बाबू : जी महाराज।

यमराज : अरे भाई जबसे हमारा नाई स्वर्ग में उर्वशी के ब्यूटी पार्लर में चला गया है तब से हमारे यहाँ की हजामत व्यवस्था ही गड़बड़ा गई है।

बड़े बाबू : जी महाराज।

यमराज : (कैंची टेबिल पर रखते हुए) क्या जी महाराज, जी महाराज। अरे भाई ऐसी महत्त्वपूर्ण बातें आप डायराइज कर लिया कीजिए और किस्मती को बताइये ताकि वह धरती से किसी नाई की आत्मा को ला सके।

बड़े बाबू : (डायरी में लिखते हुए) जी महाराज। कर लिया डायरायज। (सहसा मिट्ठन हलवाई के साथ किस्मती व उपकारी का प्रवेश)

किस्मती : (प्रवेश करते हुए) महाराज की जय हो।

उपकारी : (प्रवेश करते हुए) महाराज की जय हो।

यमराज : (प्रसन्न होते हुए) अरे आओ आओ भाई किस्मती आओ। बहुत लम्बी उम्र है तुम्हारी भाई। (फिर मिट्ठन हलवाई की ओर देखते हुए) यह कौन आत्मा है भाई ?



|किस्मती महाराज यह धरती का एक बहुत ही प्रसिद्ध और ईमानदार हलवाइ मिटठन सठ है

(फिर उसकी पत्रावली उपकारा को देते हुए) और यह इमकी पत्रावली है महाराज।

(उपकारो पत्रावली बड़े बाबू को देता है। जब बड़े बाबू मिट्ठन हलवाई की पत्रावली देख रहे होते हैं तब किस्मती मिट्ठन मेठ से ली गई पोटली चुपके से यमराज के हाथों में थमा देता है।

यमराज : (पोटली पर हाथ रखते हुए खुशी से) अच्छा-अच्छा यही है मिट्ठन सेठ, जिनका तुमने जिक्र किया था।

किस्मती : (चापलूसीपूर्वक) हाँ महाराज।

यमराज : (बड़े बाबू से) भई बड़े बाबू इनका केस जल्दी पेश करो, बड़े पहुँचे हुए हलवाई बताये जाते हैं ये।

(मिट्ठन हलवाई मुस्कुराते हुए यमराज का मौन अभिवादन करता है।)

बड़े बाबू : (मिट्ठन हलवाई की ओर इशारा करते हुए) महाराज। यह धरती का एक बहुत ही बेईमान हलवाई रहा है। इसने ताजी मिटाइयों में बासी मिठाइयाँ मिलाकर बेची हैं महाराज।

किस्मती : (यमराज को पान पेश करते हुए पोटली की ओर इशारा करते हुए) लीजिए महाराज।

यमराज . (पोटली पर हाथ फेरते हुए) भई बड़े बाबू। आप कह रहे हैं, इसने ताजी मिठाइयों में बासी मिठाइयां मिलाकर बेची

हैं और इनकी फाईल में केन्द्र सरकार के उद्योग मन्त्रालय द्वारा जारी प्रशंसा पत्र लगा हुआ है, पढ़ा आपने ? (अदालत में प्रशंसा पत्र प्रशंसा पत्र की खुसर फुसर होने लगती है।)

बड़े बाबू : (आश्चर्य से) प्रशंसा पत्र। मुझे तो नजर नहीं आया महाराज। कल तक तो फाईल में नही था।

यमराज : बड़े बाबू। लगता है बुढ़ापे के कारण आपकी दृष्टि कमजोर हो गई है। (फिर किस्मती से) हवलदार।

किस्मती : (चापलूसी के अन्दाज में हाथ जोड़कर) जी महाराज।

यमराज : भाई इस बात को डायरी में नोट करो कि बड़े बाबू की देखने व कार्य करने की शक्ति क्षीण हो गई है।

किस्मती : (डायरी में लिखते हुए) लिख दिया महाराज।

यमराज : क्या लिखा ?

किस्मती : यही महाराज कि बड़े बाबू की दृष्टि कमजोर हो गई है जिसकी वजह से ये अदालत का कार्य ठीक से नहीं कर पा रहे हैं और इससे अदालत की कार्यवाही के उचित प्रकार से संचालन में शिथिलता आने लगी है।

यमराज : वाह भाई वाह। तुम बड़े काबिल हो (किस्मती बड़े बाबू की ओर देखकर रहस्यमय ढंग से मुस्कुराता है)

बड़े बाबू : मुझे क्षमा करें महाराज। हो सकता है मुझे वह प्रमाण पत्र दिखाई नहीं दिया हो।

यमराज : (किस्मती की ओर देखते हुए बड़े बाबू से) भई बड़े बाबू



आपको शरीफ और ईमानदार व्यक्तियों मे कमिया और दोष जरूर दिखाई दे जाते हैं।

बड़े बाबू : पर महाराज इसकी फाईल में इस प्रकार का पत्र मैंने जरूर पढ़ा था कि इस हलवाई ने ताजी मिठाइयों में बासी मिठाइयां मिलाकर बेची हैं।

यमराज : भई बड़े बाबू! आप अर्थ गलत निकाल रहे हैं। (फिर सबकी ओर मुखातिब होकर) अरे मिट्ठन हलवाई बासी मिठाइयों को ताजी करने का एक नायाब तरीका ढूँढ निकाला और उन्हें अच्छी तथा उपयोगी बनाकर बेचा।

बड़े बाबू . कैसे महाराज?

यमराज . (सबकी ओर देखते हुए) अब आप लोगों ने बड़ी बड़ी फैक्ट्रियों के अवशेष पदार्थों के संशोधन से उपयोगी वस्तुएं बनाकर बेचने की बात तो सुनी ही होगी।

सब · हां महाराज।

किम्मती · हां महाराज। वैज्ञानिक लोग इस प्रकार के शोध में लगे हुए हैं जिन्हें इसके लिए डाक्टरेट की मानद उपाधियां भी दी जाती हैं।

यमराज : (बड़े बाबू की ओर देखते हुए) ऐसा प्रमाण पत्र ही तो मिट्ठन हलवाई की फाईल में लगा है कि इन्होंने अपनी विशेष तकनीक से बासी मिठाइयों को अच्छी बनाकर एवं मार्केटिंग को बढ़ावा देकर देश के विकास में योगदान दिया है।

सब बेईमान : हाँ महाराज।



बड़े बाबू : पर महाराज इस हलवाई ने साधारण ग्राहकों को खराब एवं वी.आई.पी. लोगों को अच्छी मिठाइयाँ बेचकर भेदभाव किया है अतः मेरी अदालत से दरख़्वास्त है कि इसे नर्क की सजा दी जाय।

यमराज : बड़े बाबू। आप शायद देश की सरकार की नीतियों से वाकिफ नहीं हैं। जरा अपना नोलेज अपडेट कीजिए।

बड़े बाबू : मैं समझा नहीं महाराज।

यमराज : (किस्मती से) अरे हवलदार।

किस्मती : जी महाराज।

यमजराज : अरे भाई इन्हें अवगत कराओ जरा हमारे देश की सरकार की नीतियों से।

किस्मती : (खुश होता हुआ) अभी लीजिए महाराज। (फिर सबकी ओर मुखातिब होकर बड़े बाबू से) भई बड़े बाबू। देश की सरकार चाहती है कि देश में समानता हो। बोलो चाहती है कि नहीं?

सब बेईमान : हाँ हाँ चाहती है।

किस्मती : (हाथों से शान्त होने का इशारा करते हुए) इसके लिए सरकार ने आरक्षण की व्यवस्था लागू की जो लोग कमजोर हैं एवं आर्थिक रूप से पिछड़े हैं उनके लिए अलग योजनाएँ हैं और उच्च वर्ग के लिए अलग व्यवस्थाएं हैं।

बड़े बाबू : तो इसका मिट्ठन हलवाई वाले केस से क्या लेना देना महाराज।



यमराज		लेना देना है बड़े बाबू लेना देना है।
बड़े बाबू		कैसे महाराज?
यमराज	:	भई मिट्ठन हलवाई ने भी देश की नीतियों के अनुसार ही कार्य किया है। इन्होंने (उसकी ओर इशारा करते हुए) अपनी शोधपूर्ण विधि से तैयार की गई मिठाइयां गरीब लोगों को सस्ती दरों पर एवं सामान्य मिठाइयां उच्च-वर्ग को ऊँची दरों पर बेचकर सरकारी नीतियों को लागू करने में मदद की है।
बड़े बाबू	:	(आश्चर्यचकित हो अपनी सीट से उठते हुए)-लेकिन महाराज.....
यमराज	:	(बड़े बाबू की बात को काटते हुए) अतः हम मिट्ठन हलवाई के प्रयासों की सराहना करते हुए एवं बासी मिठाइयों को ताजी बनाने सम्बन्धी उनके द्वारा किये गये अनुकरणीय कार्यों हेतु उन्हें यमलोक की मानद उपाधि डॉक्टर आफ फूड़ रिसर्च, यानी डी.एफ.आर. से सम्मानित करते हैं और इन्हें ससम्मान स्वर्ग में भेजने का ऐलान करते हैं।
मिट्ठन	:	महाराज।
सब	:	जिन्दाबाद, जिन्दाबाद।
बड़े बाबू	:	लेकिन महाराज......
यमराज	:	बस बड़े बाबू बस। अब आप दूसरा केस हाजिर करें।
यमदूत	:	आत्मा नाई, हाजिर हो।
नाई	:	(मालिश के अन्दाज में हाथों को नचाते हुए व प्रवेश

करते हुए) करा लो तेल मालिश, मालिश! (बड़े बाबू के सिर पर हाथ मारता है)

यमराज : क्या केस है बड़े बाबू, इनका।

बड़े बाबू : (पत्रावली देखते हुए) महाराज, यह धरती का एक बहुत ही धूर्त और लालची नाई है, बूचाराम। इसने अपना जीवन इधर की उधर करने में बिताया है।

किस्मती : (उपकारी को अलग ले जाकर) अबे! इसकी क्या व्यवस्था करी, तूने।

उपकारी : बड़े भाई। यह यमलोक की सारी खबरें महाराज को पहुँचायेगा, यह धरती के उन सभी लोगों की सूचना भी हमें देगा जिनके पास दो नम्बर का माल है। जिन्हें हम याड़ा एक्ट के तहत यहां ले आएंगें।

किस्मती : और ?

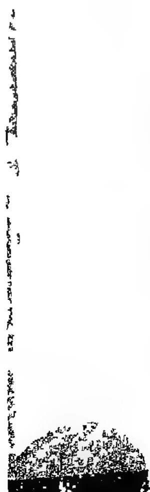
उपकारी : भैया। यह रोजना महाराज की और उसके बाद हमारी मालिश किया करेगा, जिसके पैसे भी नहीं देने पड़ेगें।

किस्मती : (खुश होते हुए) वाह भाई, वाह!

यमराज : लेकिन बड़े बाबू इधर की उधर करना, क्या कोई अपराध है ?

किस्मती : (आगे आते हुए) नहीं, महाराज। इसने इधर की उधर करके कम्यूनिकेशन के कार्य में योगदान दिया है।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज, इधर की उधर करने को हमारी संस्कृति में एक बुराई माना गया है, यह व्यक्ति का एक अवगुण



होता है

यमराज		बडे बाबू कौनसे जमाने की बात कर रहे है आप? भाई, रूढ़ियो और दकियानूसी विचारधारा का संस्कृति के नाम पर अन्धानुकरण और संरक्षण पिछड़ेपन एवं अवरोध का सूचक है। यदि समयानुसार एवं देश के विकासार्थ, सांस्कृतिक मूल्यों से समझौता करना पड़ा तो यह एक अच्छा कार्य होगा, और कुछ कहना है, आपको?
बड़े बाबू	:	(आश्चर्य से) मान लिया महाराज कि इसने इधर की उधर करके अच्छा काम किया है, पर इसने अपनी दूकान पर हजामत बनाने आए ग्राहकों की जेबें काटने में जेबकतरों की मदद की है।
यमराज	:	कैसे? क्या आप इन पर जो लांछन लगा रहे हैं उसका कोई सबूत है आपके पास।
बड़े बाबू	:	महाराज। इसकी दूकान पर जब कोई ग्राहक हजामत बनवाने आता था तो यह उसके मुँह पर पानी छिड़ककर उसकी जेब की टोह ले लेता था और जेबकतरों को इसकी खबर कर देता था और बेचारे ग्राहक लुट जाते थे।
यमराज	:	बड़े बाबू आप होश-हवास में है?
बड़े बाबू	:	हां, महाराज इसका एक सबूत भी है मेरे पास।
सब	:	सबूत। सबूत। सबूत!
यमराज	:	कैसा सबूत, कहां है वह? पार्श्व में गायन- ढूंढो ढूंढो रे ढूंढो रे छुपा है सबूत कहाँ? (किस्मती व उपकारी उसे





कुर्सी टेबिल आदि के नीचे ढूढत है)

बड़े बाबू : यहीं है महाराज, वह। (किस्मती व उपकारी बड़े बाबू की टेबिल के नीचे ढूँढ़ते हुए पहुँच जाते हैं) यहीं यमलोक में मौजूद है और उसका नाम है - टाईगर।

यमराज : (आश्चर्य से) टाईगर!

उपकारी : टाईगर!

यमराज : (चिन्तित होकर कुछ सोचते हुए) ठीक है, ठीक है, उसे गवाहों के कटघरे में हाजिर किया जाए।

यमदूत : स्वर्गाधिकारी नेक आत्मा, टाईगर हाजिर हो।

(टाईगर गवाहों के कटघरे में जाकर खड़ा होता है, उपकारी यमग्रन्थ लाकर टाईगर के पास ले जाता है)

टाइगर : मैं इस यमग्रन्थ...........

बड़े बाबू : हां तो टाईगर साहब। क्या आप इस व्यक्ति को जानते हैं? (नाई की ओर ईशारा करते हुए)

टाईगर : जी हां, यह धरती का एक ईमानदार और कर्मठ नाई बूचाराम है।

(खुश होते हुए) वाह! टाईगर वाह। तुम यहाँ कैसे, भाई?

यमराज : (हथौड़ा मारते हुए) आर्डर आर्डर।

बड़े बाबू : हा तो बूचारामजी, क्या आप टाइगर को जानते हैं?

बूचाराम : हा, महाराज। यह मेरा दोस्त है और मेरी दूकान पर रोज आया करता था।

बड़े बाबू : क्यों आया करता था, तुम्हारे पास?



(बूचाराम डरकर चुप हो जाता है और टाइगर की ओर देखता है, टाईगर भी डरकर चुप हो जाता है, यमराज किस्मती की ओर देखता है)

किस्मती : (आगे आते हुए) बड़े बाबू। यह टाईगर इनकी दूकान पर हजामत सीखने आया करता था।

बड़े बाबू : (आपत्ति करते हुए) महाराज। इस तरह न्यायालय की कार्यवाही में व्यवधान डालना कानूनी अपराध है।

बूचाराम : (बड़े बाबू से) जी हां महाराज। यह टाईगर मुझसे हजामत की ट्रेनिंग लेने के लिए आया करता था।

यमराज : क्या? क्या आप लोगों को हजामत सिखाते भी थे?

किस्मती : हां महाराज। इन्होंने सामान्य लोगों को हजामत सिखाकर परम्परागत कला के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है।

यमराज : वाह, बूचारामजी, वाह। आपने हजामत बनाने जैसे कठिन और परम्परागत कार्य का जन-सामान्य को प्रशिक्षण देकर इस क्षेत्र में एक नया और आई टी.आई. जैसी शिक्षा देने का अनुकरणीय कार्य किया है।

बूचाराम : महाराज। यदि आप आज्ञा दे तो मैं यहाँ भी ब्यूटी पार्लर चला सकता हूँ।

यमराज : यह तो हमारे लिए और भी अच्छी बात होगी। (फिर बड़े बाबू की ओर मुताखिब होकर) भई बड़े बाबू यह तो हमारे लिए एक अच्छा अवसर है कि बूचारामजी जैसे कुशल हज्जाम हमारे लोक में है। अब हम यमलोक

में भी प्रशिक्षण शिविर लगायेंगे जिसमें बूचाराम लोगों को हजामत बनाने की परम्परागत कला का प्रशिक्षण देंगे।

किस्मती : और परम्परागत कला के विकास के लिए तो इन्हें सरकारी अनुदान भी मिलेगा।

बूचाराम : और महाराज, इस टाईगर ने मेरे यहाँ से डिप्लोमा कोर्स कर रखा है, अतः यह मेरे सहायक के रूप में कार्य करेगा।

बड़े बाबू : लेकिन महाराज.....

यमराज : अतः आज से बूचारामजी को स्वर्ग में स्थान देकर प्रशिक्षक के पद पर नियुक्त किया जाता है।

बूचाराम : महाराज।

सब : जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!

(बड़े बाबू सिर पकड़ लेते हैं, टाइगर और बूचाराम जी गले मिलते हैं, प्रकाश उन पर मंद-मंद होता हुआ बुझ जाता है)

(दृश्य – समाप्त)

****



छठा दृश्य

(स्थान यमलोक का दृश्य)

(यमराज अपने दानो सहयोगियों - चौकीदार किस्मती एवं चपरासी उपकारी के साथ चिन्तित मुद्रा में टहल रहे हैं। स्टेज के बायीं और स्वर्ग में सितारा देवी, मूमल देवी, टाईगर आदि हँसी-ठट्ठों में मशगूल हैं।)

यमराज : (चिन्तित मुद्रा में) अब क्या होगा, किस्मती मुझे बहुत चिन्ता हो रही है।

(चिन्ता शब्द सुनकर सभी स्वर्ग वाले यमराज के पास आ जाते हैं।)

किस्मती : (पास आकर) कैसी चिन्ता प्रभु। मुझे भी तो बताइये।

मूमल देवी : (कंधे पर से बंदूक उतारते हुए) मुझे बताइये प्रभु क्या कोई आक्रमण कर रहा है। मैं आपके लोक की रक्षा मंत्री हूं। (फिर दर्शकों की ओर बन्दूक तानकर) अभी सफाया कर देती हूं सबका।

टाईगर : (उस्तरा निकालते हुए) प्रभु। ये हथियार पहले लोगों की जेबें काटता था अब आप आज्ञा तो करें। ये किसी की गर्दन भी काट सकता है।

यमराज : (आँखें मूदकर प्रसन्नता से) मेरे बहादुर शेरों और (रूपसी की ओर देखते हुए) हितैषियों। आप जैसे वीर-बहादुर, नीतिवान एवं रूपसी के होते हुए चिन्ता किस बात की।

रूपसी : फिर क्या बात है महाराज।

उपकारी : आज भगवान यमलोक का निरीक्षण करने आने वाले हैं।

किस्मती : और महाराज इस चिन्ता में हैं कि कहीं भांडा हमारा नहीं फूट जाय।

रूपसी : कैसा भांडा किस्मती?

यमराज : आप तो जानती ही हैं कि हमने अपनी बुद्धि और विवेक से आप सभी को स्वर्ग में स्थान दिया है।

रूपसी : यह तो आपकी मेहरबानी है प्रभु।

यमराज : पर आप जानती ही है कि इसके लिए हमें ऐसे लोगों को नर्क में भेजना पड़ा जो वास्तव में स्वर्ग के अधिकारी थे।

मूमल देवी : (कुछ सोचती हुई) हाँ महाराज यह तो चिन्ता का ही कारण है। भगवान यदि ईमानदारों को नर्क में और बेईमानों को स्वर्ग में देखेंगे तो अपना भांडा तो फूटना स्वाभाविक ही है।

टाईगर : महाराज मुझे तो उस बड़े बाबू की चिन्ता है। वह ईमानदार का बच्चा जरूर भगवान से हमारी शिकायत करेगा।

किस्मती : अजी उसका तो इन्तजाम कर दिया प्रभु ने।

टाईगर : क्या, क्या इन्तजाम कर दिया उसका?

उपकारी : प्रभु ने ऑफिस आर्डर निकालकर उन्हें एक सरकारी ट्यूर पर भेज दिया।

टाईगर : वाह प्रभु वाह क्या युक्ति ढँढ़ी है आपने भी।

यमराज : परन्तु अभी चिन्ता खत्म नहीं हुई है।

मूमल देवी : (चौंकते हुए हाथ का इशारा करके) मुझे युक्ति मिल गई



इस संकट से छुटकारे की।

यमराज   (झटके से पास जाकर) कैसी युक्ति? जल्दी बताओ (अन्य सब भी पास आ जाते हैं)

मूमल देवी : (शून्य में देखते हुए महाराज से) महाराज। आप स्वर्ग एवं नर्क के साईन बोर्डों को बदलवा दें।

यमराज : कैसे?

मूमल देवी : महाराज स्वर्ग का बोर्ड नरक पर लगवा दें, भगवान सोचेंगे कि सभी ईमानदार व्यक्ति जो नर्क भुगत रहे हैं स्वर्ग में हैं.....।

यमराज : (बीच में बात काटते हुए) और नरक का बोर्ड स्वर्ग पर लगवा दें ताकि भगवान समझें कि स्वर्ग भोग रहे आप सब लोग नरक में पड़े हैं।

सब : वाह वाह।

यमराज : (सबसे) भाई वाकई ये राजनीतिज्ञ हैं। हम भी मुख्यमंत्री थे जमीन पर एक राज्य के, परन्तु ऐसी युक्ति तो कभी हमें भी नहीं सूझी थी। (फिर किस्मती व उपकारी से) जल्दी करो भगवान आने वाले हैं।

दोनों : जी महाराज। (दोनों जाते हैं और साईन बोर्ड बदल देते हैं।) (सहसा भगवान का उनके मंत्री के साथ प्रवेश।)

यमराज : (अगवानी करते हुए) पधारिये प्रभु पधारिये।

भगवान : कहो यमराज जी कैसे हो? आपके लोक में न्याय-व्यवस्था कैसी चल रही है।

यमराज : प्रभु सब कुछ आप द्वारा निर्देशित नियमों व उपनियमों के

अनुसार हो रहा है। न्याय-व्यवस्था का पालन बड़ी सख्ती से किया जा रहा है। सभी ईमानदार व्यक्तियों को स्वर्ग में एवं सभी अपराधियों को नर्क में स्थान दिया जाता है प्रभु।

यमराज : (भगवान से) – प्रभु निरीक्षण कर लिया जाय।

भगवान : (यमराज से) – हाँ यमराज जी चलो एक बार सब कुछ देख लिया जाय। (यमराज आगे-आगे चलकर पहले भगवान को नरक का दौरा कराते हैं। भगवान नरक लिखी प्लेट देखकर वहां के लोगों पर एक नजर डालते हैं।)

भगवान : (सब पर एक नजर डालते हुए) हूं। टाईगर। माना हुआ जेबकतरा और अपराधी। (फिर आगे बढ़ते हुए) मूमल देवी। मानी हुई डकैत और हत्याओं में लिप्त राजनीति का मोहरा। (फिर आगे बढ़कर) और सितारा देवी। देशद्रोही और विदेशी तस्करों की एजेन्ट। वाह यमराज जी वाह। हम आपकी न्याय व्यवस्था से प्रसन्न हुए। आपने सभी अपराधियों व बदमाशों को नर्क में स्थान देकर हमारी न्याय व्यवस्था की एक मिसाल कायम की है।

यमराज जी : (हाथ जोड़कर) यह तो आपकी कृपा है प्रभु, वर्ना हमने तो न्याय व्यवस्था के अनुरूप सामान्य कार्य ही किया है (फिर भगवान उनकी स्वर्ग की ओर आगवानी करते हुए) – अब यदि आप उचित समझें तो एक नजर स्वर्ग की ओर भी डाल लें।

भगवान : हाँ हाँ क्यों नहीं। (फिर स्वर्ग लिखी प्लेट की ओर नजर



डालकर अन्दर प्रविष्ट होते हैं। अन्दर भोलाराम अकेला होता है। अतः उसे पहचानते हुए) - कौन भोलाराम!

भोलाराम : (हाथ जोड़कर भगवान के पैरों में गिरता हुआ) - महान प्रभु आप, जो मुझे गरीब को भी पहचान लिया।

(यमराज व उनके दोनों सहयोगी इस डर से आशंकित हो जाते हैं कि कहीं भोलाराम भांडा न फोड दे। अतः किस्मत सिंह भोलाराम के पास जाकर आँखें दिखाता है।)

भगवान : (यमराज से) - वाह यमराज जी वाह। यह भोलाराम धरती का बहुत ही ईमानदार और कर्मठ व्यक्ति था। आपने इसे स्वर्ग देकर अपनी न्यायप्रियता का परिचय दिया है।

भोलाराम : भ.......... भ.... .... (कुछ बोलना चाहता है परन्तु किस्मती उसे बीच में ही हाथों से रोककर बैठा देता है।)

किस्मती : बैठो भोलाराम बैठो। तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। हम प्रभु से कह देंगे कि तुम्हारे घर-परिवार और बच्चों पर दया-दृष्टि रखेंगे।

भगवान : (यमराज से) क्या इसकी तबियत खराब है?

यमराज : हां प्रभु। कुछ दिनों से घर की, बाल-बच्चों की याद करके बड़बड़ाता रहता है। पर हम इसका इलाज करा रहे हैं।

भगवान : किससे इलाज करा रहे हैं?

यमराज : प्रभु नरक लोक में एक बहुत बड़े डाक्टर जो बहुत कर्मठ और ईमानदार उनसे इलाज करवा रहे हैं।

भगवान : (चौंकते हुए) ईमानदार और नर्क में। यह कैसा न्याय है

यमराज जी

यमराज : (कुछ टालते हुए) अब क्या बतायें प्रभु। छोड़िए इस विषय को।

भगवान : नहीं यमराज जी हमें खुलासा करके बताइये इस रहस्य को।

यमराज : क्षमा करें भगवान। इस आत्मा का निर्णय मेरे से पहले वाले यमराज ने किया था। और बेचारा वह ईमानदार डॉक्टर अभी तक नर्क में पड़ा है।

भगवान : लेकिन यमराज जी आपने क्यों उसे नरक में रख रखा है? क्यों नहीं उसे स्वर्ग में स्थान दिया?

यमराज : परन्तु प्रभु मैं पहले वाले यमराज के आदेशों को कैसे बदल सकता था?

भगवान : तो हमसे कहते। हम तो बदल सकते थे।

यमराज : (किस्मती से) - किस्मती, डॉक्टर की फाईल लाओ। (किस्मती दौड़कर फाईल लाता है और यमराज को देता है। यमराज फाईल खोलकर भगवान के समक्ष प्रस्तुत करते हुए) - ये लीजिए प्रभु। सब कागजात तैयार हैं, (लेते हुए)

भगवान : (फाईल पर हस्ताक्षर करते हुए) अच्छा भई यमराज जी अब हम प्रस्थान करेंगे। आप इसी प्रकार न्याय करते रहना।

यमराज : अरे भई अब तो भगवान ने निरीक्षण कर लिया साईन बोर्ड बदल दो।

किस्मती व उपकारी (खुश होत हुए अभी ल प्रभु

(दोनों वापस साईन बोर्ड उतार लाते हैं और स्टेज के मध्य में पहुँचकर एक दूसरे से टकरा जाते हैं। साईन बोर्ड नीचे गिर जाते हैं। सितारा देवी, मूमल देवी, टाईगर आदि उन्हें आकर उठाते हैं।)

यमराज : अरे भाई साईन बोर्ड दिखाओ तो कहीं उल्टे मत लगा देना। दोनों साईन बोर्ड दर्शकों की ओर दिखाते हैं जिसमें से एक पर लिखा है समाप्त और दूसरे पर The End.

नेकीराम : अरे यह क्या हो रहा है भाई। मुझे भी तो बताओ। अरे दी एण्ड हो गये रे।

(समाप्त)